आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत
विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 07 | उदयपुर रविवार 15 अप्रेल 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

क्यों होता है पहाड़ों का नहाना, पहाड़ियों का जलना ?

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

प्रकृति और पुरुष का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहा है। यह सम्बन्ध सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर अब तक देखने को मिलता है। इसीलिए कहा गया है जहां प्रकृति है वहां पुरुष है। अकेला कोई नहीं है। प्रकृति अनेक रहस्यों और चमत्कारों की लदान-खदान है। पुरुष उसके सामने बौना है। इसलिए जिन-जिन तत्वों को उसने अपने लिए आवश्यक माना उनकी सत्ता स्वीकार की और उनकी आराधना-पूजा प्रारम्भ कर दी। बरसात, हवा, अग्नि आदि को देव रूप में स्वीकार करने के पीछे भी यही भाव रहा। ऐसे ही वनांचल से जुड़े मगरे-मगरियों किंवा पहाड़-पहाड़ियों को भी उसने देवता के रूप में स्वीकार कर उनकी अर्चना, मान-मनौती शुरू कर दी।

इसके पीछे पुरुष में यह भय भी घर कर गया कि यदि इनकी ठीक से सेवा-पूजा, मान-मनावण नहीं की गई तो ये रूष्ट होकर अनिष्ट कर देंगे जिससे उसका ठीक से जीना दूभर हो जायगा और वह कई आपदाओं से गिर जायेगा। व्यष्टि से यह भावना समष्टि में फैली तब सामूहिकता से उनका जुड़ाव बना। लगा पूरे गांव पर संकट आजायेगा। फसल बर्बाद हो जायेगी। जानवरों में मांदगी घर कर लेगी। इसीलिए मगरे को मगरा देवता, मगरा बावसी कहना शुरू कर दिया।

मेवाड़ क्षेत्र में फैली तमाम पहाड़ियों में आग लगने की घटनाएं प्रतिवर्ष ही घटित होती रहती हैं। ये घटनाएं क्यों होती हैं? क्यों पहाड़ जलते या जलाये जाते हैं? इन सबके पीछे कौन-कौन सी धारणाएं किंवा ताकतें काम कर रही हैं? क्या देवता रूष्ट होकर यह करिश्मा करते हैं या कोई व्यक्ति इस प्रकार की कारस्तानी करता है? आइये इसकी पड़ताल करें।

मगरों-मगरियों में आग लगने-लगाने में आदिवासी समाज की भूमिका होना माना जाता है। वे इसे मगरा स्नान कराना कहते हैं। पहले तक यह माना जाता था कि मन्नत पूरी करने पर आदिवासी मगरा नहाते हैं। ऐसा करते समय वे पहले से भगवान के नाम का दीपक जलाते हैं और कहते हैं कि अग्नि स्नान के बाद जब पूरा जंगल नयेपन में खिल उठेगा तो लगेगा जैसे उन्होंने पेरावणी देने का संस्कार किया है।

कहा तो यह भी जाता है कि जहां सूखी घास ज्यादा होती है वहां आपसी रगड़ से अग्नि प्रज्वलित होकर धीरे-धीरे फैलती रहती है। बांस भी आपस में टकराकर आग फैलाने में सहायक होते हैं। एक पक्ष की दलील यह भी है कि पहले जंगल अति घने होते थे। पत्तों के जड़ने के कारण, वृक्षों की सूखी टहनियों के कारण, पुराने वृक्षों के धराशायी होने के कारण जब पूरा जंगल अस्तव्यस्त हो जाता और पगडंडी की राह तक नहीं रहती तब पूरे जंगल की शुद्धि के लिए उसे अग्नि भेंट कर दिया जाता जिससे उसमें निखार हो आता और उसके बाद पूरी वनराई नवीन भव्य परिवेश में फूट आती। एक नवीन ताजगी, खुशबू से नवखण्ड और अधिक रूप में खिलखिला उठता।

यह भी सुनने में आता है कि जैसे तपस्या करने से जीवन निखर आता है और आत्म शुद्धि हो जाती है उसी प्रकार जंगल भी जलकर एक तपस्वी की तरह निखर आता है और उसके सौंदर्य में अभिवृद्धि होने लगती है। जंगल के आसपास रहने वाले अथवा उधर से गुजरते लोगों द्वारा सुलगती बीड़ी-सिगरेट फैंकने से भी ऐसा हादसा होना स्वाभाविक है।

जंगलों के बीच अथवा पास से गुजरती बीजली लाइन में शोर्ट सर्किट होने से भी ऐसी दुर्घटना घटना संभव जान पड़ता है। कहा तो यह भी जाता है कि महुआ संग्रहण करते समय असावधानी से घास जलाने के बाद की चिंगारियां भी कभी-कभी आग धधकाने का सबब बन जाती हैं। यह भी कहा जाता है कि शहद संग्रहण के समय धुंआ द्वारा मधुमक्खियों को उड़ाया जाता है तब भी धुंए की लपट आग पैदा करने में सहायक हो जाती है।

इस वर्ष बड़ी, देबारी, डबोक, एकलिंगजी, बलीचा, अमरखजी, झामेश्वरजी, गोदेला, रानी रोड़, झापा, पालारा, कैलाशपुरी, सज्जनगए, केवड़े की नाल, उदयसागर, झामरकोटड़ा, उमरड़ा, रामा, भीलों का बेदला के असपास की पहाड़ियों में लगी आग कई दिनों तक सुलगती रही। इससे सारे पहाड़ नंगे हो गये। एक अखबार में यह खबर छपी-

विशेषज्ञों ने बताया कि बड़े जीव-जन्तु तो आग लगने से क्षेत्र छोड़कर दूसरे क्षेत्र या पहाड़ी पर चले जाते हैं, लेकिन रेंगते हुए चलने वाले सरिसृप और छोटे वन्यजीव भाग नहीं पाते और आग में फंस जाते हैं। पक्षियों के आशियाने, घोंसले भी जलकर राख हो जाते हैं। उदयपुर शहर के चारों ओर पहाड़ियों पर कई प्रजातियों के सांप, अजगर, गोह, छोटे वन्यजीव बिज्जू, सेही, खरगोश, झाऊ चूहा, नेवला, कछुआ काफी संख्या में मिलते हैं। इनके अलावा बड़े ईगल, घुग्घू, इंडियन आउल, ब्राउन पिशुर आउल कई प्रकार के तीतर, स्टॉर्क, आईबीज सहित कई बड़े बगुले और स्थानीय और प्रवासी पक्षियों का बड़ा आवास भी ये पहाड़िया हैं।

-दै. भास्कर, 3.4.2018, पृ. 3

पिछले तीस-चालीस वर्षों में इन पहाड़ियों के अलावा कुंभलगढ़, कोटड़ा, भोमट, पानरवा तथा आबू, सिरोही में जो मगरे-मगरी जलते देखे उनका नजारा कई रंगों में मुझे देखने को मिला। इस भ्रमण में दीवाली के दीपों की तरह कहीं झिलमिलाते पहाड़ मिले तो कहीं ज्वालामुखी की तरह धधकते मगरे देखे गये। कभी घनघोर धुंआ के बीच आग की चिनगारी ऐसी लगी जैसे घने बादलों के बीच लगातार बीजली चमक रही हो। कभी लगा जैसे लगातार एक बड़ी रस्सी जलती जा रही है। कभी लगा जैसे खेत में खड़ी फसल मधरे-मधरे जल रही है। आकाश में कभी दीपक तो कभी जुगनू छलांगें मारते चक्कर काट रहे हैं। सोने के मोती या कि बिंदावलियां चमक दे रही हैं। कोई आग से फाग खेल रहा है या सारा क्षेत्र ही एक विशेष प्रकार की धूणी बना हुआ है। यह आग कहीं भयंकर लगी तो कहीं सुहावनी सौम्य भी जैसे फूलझड़ी की झिरमिराती चिनगारियां फूट रही हैं। आदिवासी समाज के मोतबीर कहते हैं कि पहले कभी ऐसी परम्परा रही है पर अब समाज सजग हो गया है और आग लगने के नुकसान को वह भलीप्रकार जान गया है। जंगल वैसे भी कई कारणों से उजड़ गये हैं। पहाड़ियां टाटली हो गई हैं। कई तरह के वृक्ष तथा जड़ीबूंटियां जो पहले थीं, सदैव के लिए समाप्त हो गई हैं। ऐसी स्थिति में जो कुछ बचा रह गया है उसका संरक्षण अनिवार्य आवश्यक है।

सम्मान की चाहत नहीं

-डॉ. नरेन्द्र भानावत-

यह जो तुम मेरा सम्मान करते हो,
एक तरह से मेरी सेवाओं का मूल्यांकन करते हो,
अपना कृतज्ञता का भाव प्रकट करते हो,
गुणानुवाद करते हो,
प्रमोद-भाव व्यक्त करते हो,
पर इससे मेरा मान बढ़ता है,
सुषुप्त अहं जाग उठता है।
मैं नहीं चाहता कि सम्मान के सम्मुख आऊं,
इससे विमुख रहने में ही मेरा हित है,
मेरा पुरुषार्थ जाग्रत है।
पर, तुम्हारे प्रेम की डोर
सम्मान की ओर मुझे खींच लेती है,
मैं अपने को कैसे रोकूं, कैसे टोकूं।
मैंने जो कुछ किया,
कर्तव्य भावना से किया,
अपनी जीवन्तता के लिए किया,
किसी चाह के लिए नहीं,
बदल में कुछ प्राप्ति के लिए नहीं,
फिर इस प्राप्ति से,

क्यों तुम मुझे अतृप्त करते हो,
मेरी प्यास बढ़ाते हो,
मेरे परिग्रह के संसार को विस्तार देते हो।
यह ठीक है कि कुछ लोगों के लिए
सम्मान एक भूख है,
वे इसकी परितृप्ति के लिए छटपटाते हैं,
भाग-दौड़ करते हैं,
जोड़-तोड़ करते हैं,
पर मेरे लिए सम्मान एक भार है,
मैं कैसे इसे आभार बनाऊं।
मुझे लगता है जैसे मेरी बढ़त रूक गई है,
मैं बहुत छोटा हो गया हूं।
प्रभु! मुझे यह समझ दो,
बोध दो
कि मैं सम्मान से अपने को सम्मानित न समझूं।
समाज के प्रति इसे अपना समर्पण मानूं,
और प्राणशक्ति जुटाकर दुगुने वेग से,
लोक-सेवा में अपने को अर्पण करूं,
समतुल्य बना रहूं।

गंगाजी रा पर्यायां रा दूहा

- प्रो. भूपतिराम साकरिया -

उड़ियो चंदर ओढणो, ब्रह्मदेव दरबार।
लागो शाप विरच रो, उतरी गंग त्रिपुरार।। 1।।
शोभी परणी वर शांतनु, उपन्यो अष्टम जाम।
ब्रह्मचारी पराक्रमी, पड़ियो भीष्म सू नाम।। 2।।
करी तपस्या आकरी, सरगां मिस सगरोत।
भागीरथ भागीरथी लाया धरा बहोत।। 3।।
खलचण खळ खटराग खट, खळळ खापगा खाप।
अध काटे अगलूण अच, आई आपगा आप।। 4।।
कळ कळ करंत कळनाद कटवण अघ कटिबद्ध।
कमळ जैण करूणा करी स्वर्धूनी सन्निद्ध।। 5।।
तिहूं लोक में तीन रूप, स्वर्ग मृत्यु पाताळ।
त्रिविध ताप हरण तरण त्रिस्त्रोती त्रिकाळ।। 6।।
गंगा निसरी गंगसिर, त्राहि-त्राहि तब त्रासि।
जह्न पी गयो पूर्ण जद, जांघ वही जाह्नवि।। 7।।
गंगा गंगोत्री ऊपनी, आई बह गंगद्वार।
बिसतरियो निज रूप तद, प्रथपथी पैंली वार।। 8।।
सरगां व्हेती रात-दिन, मंद-मंद मंदाकीनि।
भव-भव रो भांगे भरम, मात दरस मतिहीनि।। 9।।
पंकज-पाद पावन परम, निशुंभन अध वर नीर।
विष्णुपद सू विष्णुपदी, निसर्‌या ऊजळ नीर।। 10।।

स्मृतियों के शिखर (50) : डॉ. महेन्द्र भानावत

भजन बिना कभी अलूणी नहीं रही सोहनीबाई

सोहनीबाई का नाम तो बीकानेर में अध्ययन करते, कभी सुन लिया था। सन् 1954 से 1958 तक का वह समय मेरी इन्टर-बी.ए. की पढ़ाई का था सो उस बाल-बुद्धि में जितना जो कुछ हो सकता था, वह हुआ पर साहित्यिक हलचल ही अधिक रही। जब गजानन वर्मा, भीम पंड्या, हरीश भादाणी की कविताओं का जोर था। तब रामपुरिया तथा डूंगर कॉलेज में मेवाड़ के मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्रजी और उनकी देखादेखी मैं भी साहित्यिक हलचल देने में दिखने-दिखाने लग गये थे। कवि सम्मेलनों के आयोजनों में हम भी अपने हाथ-पांव रखने लग गये थे।

बी.ए. के बाद ही मैं उदयपुर आ गया और भारतीय लोककला मण्डल में संस्थापक देवीलाल सामर ने लोक कलाकारों का राजस्थान व्यापी प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर मुझे उसका दायित्व सौंप दिया। दो माह के चार शिविरों में जगह-जगह के कलाकारों से गाने, बजाने, नाचने तथा देर रात तक प्रदर्शन रंग जमाने की कलाबाजी से मेरा घरेलूपन का सम्बन्ध जुड़ा।

बेदला राव के महलों में ही सबके रहने, खाने तथा प्रदर्शन दिखाने की व्यवस्था रही। मैं भी पूरी दिल्लगी के साथ उस रंग में रंग गया। पचासों तरह की जानकारी का जैसे मुझे समुद्र मिल गया। इस कुंवारेपन में जो जितना कुछ मैं पा सका उसे आंखन लेखी करता रहा। यही आगे जाकर मेरी पूंजी बनी जिसे मैं आज भी बढ़ाने की घाणी में बैल की तरह जुता अपने को महसूस कर रहा हूं।

वहीं रेगिस्तान के कलाकारों से भजन गावणी सोहनीबाई के सम्बन्ध में जाना कि जैसे मीरांबाई कृष्ण में पगी रहती थी वैसे ही सोहनीबाई अपने भजनानंद में लगी रहती है। भजन के बिना कोई दिन ऐसा नहीं कि उनका अलूणा निकल जाय। अपने हिये के तारों को हर समय ही तन्दूरे के तारों से मिलाये रखती हैं।

सामरजी से बात छिड़ी तो उन्होंने अपने कई अवसर-प्रसंग सुनाये और कहा कि उनकी गायकी में जो सहज और सादापन है वह उनके जीवन में भी लबालब है। सुनते ही जाओ, तन्दूरे की जुन-धुन पर सोहनीबाई का स्वर कभी थका नहीं लगेगा। अपने आराध्य के प्रति उनका ममत्व, उनकी छटपटाहट, उनकी अनुनय विनय करती भावनाएं, बिछोह, तड़फ उन्हें सबसे अलग पहचान देती है।

कलामण्डल में तो सोहनीबाई बुलाई ही गई, अन्यत्र भी जहां-जहां संगीत नाटक अकादमी की अन्य संगीत संस्थाओं द्वारा समारोह हुए, सामरजी ने सोहनीबाई को सदैव याद किया और उनको पूरा सम्मान दिया। कभी अल्लाजिलाई बाई के साथ तो कभी गवरीदेवी के साथ ऐसे समारोहों में मैं भी सोहनीबाई से लगातार भेंट करता रहा।

मुझे हर भेंट के दौरान सोहनीबाई एक जैसी साधिका लगीं। उनमें कभी मैंने अपने बड़े होने का भाव नहीं देखा। कभी उन्होंने पारिश्रमिक के लिए भेजामारी नहीं की। जैसी भी सुविधा खान-पान रहने-ठहरने की रही, उन्होंने उसे ही श्रेष्ठतम समझी। वह सदैव पके हुए फल से लदी शाखा की तरह ही अपनी साख दिये रही।

सामरजी के निधन के बाद जब कलामण्डल ने 21 से 23 फरवरी 1982 को 5वां लोकानुरंजन मेला आयोजित किया तब भी सोहनीबाई को बुलाया गया। यह पूरा मेला ही सामरजी की स्मृति को समर्पित था। शहर में सभी कलाकारों ने जुलूस के रूप में अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। आगे ही आगे सामरजी की फूल-मालाओं से लदी तस्वीर से पूरा शहर ही गमगीन लगा।

सोहनीबाई ने पूरे रास्ते भर अपनी रुदन देती गायकी में भजनाश्रु से सबको विकल बनाये रखा। उसने मुझे बताया भी कि पिछले 26 बरस से सामर साहब से उनका परिचय था। वे उनसे सूर, तुलसी, मीरां और गोरखनाथ के भजन सुनते। सामरजी का उनके प्रति अटूट स्नेह तथा प्रेमभाव था। वे हर समय सोहनीबाई को अपने पूर्वजन्म के पिता ही लगे।

सोहनीबाई अपने से अधिक अपने साथ वाले तन्दूरे को महत्व देती। सर्वाधिक रूप में उसकी हिफाजत करतीं। गाते समय अपने आगे गोद में बड़े करीने से उसे रख तारों पर अपनी हल्की उंगलियां घुमातीं लगता जैसे स्वरों का समंद ही हिलर गया है। अपने तीनों दिन के प्रवास में वह बेमन बोझिल ही रहीं। कहा भी कि -'आपका कागज पढ़ते ही आंखों में अंधेरा छा गया। मन में आया, क्या करूंगी वहां जाकर! सामर साहब सबकी रौनक थे। उन्होंने कलामंडल में हर समय मुझे याद किया।

अन्य संगीत समारोहों में भी कभी जयपुर, कभी कोटा, कभी अलवर, बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर में बड़े-बड़े कलाकारों से मेरी मुलाकात कराई और मेरा बड़ा मान बढ़ाया। मीरां सांवरे के दर्द की दीवानी थी। मैं यहां मेरे सामरे का दर्द पाने आई हूं।'

सोहनीबाई ने अपना दर्द हल्का किया अथवा नहीं, किन्तु अपनी हर प्रस्तुति में उसने सामरजी की स्मृति में जो भजन प्रस्तुत किया उससे कलामंडल के मुक्ताकाशी मंच पर उपस्थित पूरे श्रोता समुदाय को मैंने अश्रु विगलित बेहाल होते देखा। देखा यह भी कि सोहनीबाई के कंठ-स्वरों में ऐसा क्या कमाल है जो पूरे वातावरण को ही विरह के विपुल वितान में विदग्ध किये हुए है।

अपने भरे हुए हियड़े से आंखों में छलकाव लिए तन्दूरे से रुदन भरी सीसकियां देती सोहनीबाई के कंठ-बोल छलक पड़े-

जामीं थारो विरह सतावे रे
म्हानैं छोड़ गया अकेला बिरज रा वासी
ओलूंडी लगा गया रे...... जामीं
देवीलाल ओलूं थारी आवे रे
गुण थारा याद करता हियो भर जावे रे
म्हारे मनड़ री मन में रे गई रे......
देवीलाल......
कियां बोलूं रे म्हारा जामीड़ा रे......
ओलूं थारी आवे रे ......

सोहनीबाई की लम्बी खींचती तान में एक रेरका है। रुदन की आवाज जब लम्बी दूर-दूर तक नपती है और किसी को हेला देती सुनाई देती है, उसे रेरका कहते हैं। रह-रह कर सोहनीबाई की आवाज जैसे सुबकियां ले रही थीं।

चेहरे पर हल्के से घूंघट में सोहनीबाई की दुबली-पतली काया के साथ वे न जाने कितने कोस नाप रही थी। उसे सुन कोई भी कृष्ण के विरह में बेसुध बेबस बनी मीरां की बान का अंदाजा लगा सकता है।

एक बेपढ़ी बेलिखी नारी ने सामरजी की याद में उसी तरह भजन गाया जिस तरह वह मीरां के या कबीर के गाती है। श्रोताओं पर वैसा ही असर हिरदे की ऊंचाई में पैठ जाता है जिस पैठ से सोहनीबाई गाती है। पूछने पर बताया कि- 'गाते समय खो जाती हूं। न जाने कहां चली जाती हूं। यह भी भान नहीं रहता कि कहां बैठकर किसके सामने गा रही हूं।'

सामरजी का वह भजननुमा भाव कहां से आया! कब रचा! कैसे रचा! पूछने पर सोहनीबाई बड़ी भावुक हो गई। लगा फिर कहीं खो गई है। उत्तर उसके पास कहां था! किसने कब कैसे किस तरह वह भावांजलि लिखने की प्रेरणा दी, उसे क्या मालूम। खुद ने तो लिखा नहीं। बोली- 'बावजी मुझे यह सब पूछकर क्यों उलझन में डाल रहे हो। मेरे लिए तो काला आखर भैंस बराबर है। पढ़ी-लिखी नहीं हूं। न कोई काणकायदा समझती हूं।'

'जिस जगै गाना शुरू करती हूं, आपोआप सुरसत माई मेहरबां हो जाती है। बाकी मेरी क्या बिसात। वो ही कंठ देती है। गाना देती है। सुर और स्वर देती है। उसी से मेरी रुजग रोटी चलती है। उसने यह तन्दूरा पकड़ा दिया जो मुझ अंधी को रोशनी देता है। आंखें बंद करती हूं तो हिया खुलता है। तन्दूरे पर आंगलियां रखती हूं तो तार तनतनाकर ग्यान का ताला खोलते हैं और शुरू हो जाती हूं। क्या गाना, कैसे गाना है, कुछ भी पता नहीं रहता। तार चलता रहता है। स्वरों की लटाएं आती रहती हैं। एक खाटड़ी बुनती जाती है।'

'मीरांजी गाती हूं तो वो ही मावड़ मेहर हो जाती है। वो ही सागसात गाती है। मैं तो सहारा हूं। शरीर मेरा है, रुह उसकी है। ऐसे ही कबीर बाबा मेहरबां होते हैं। गुरु गोरखबाबा हिरदे के खोबड़े में दसरन दे जाते हैं। चन्द्रसखी किसनजी की छवि में मुझे दरसन देती है। भजन पूरा होने पर आपोआप आंगल्यां रुकती है। तन्दूरा सुन्न में चला जाता है। आंख्यां खोलती हूं तो सामने वाला जगत बैठा दिखाई देता है। आपने मोटी दनियां देखी है। म्हैं तो माछर मछेरी हां। अणी रहस रा किमाड़ कुण खोल सकै है।'

- शेष पृष्ठ सात पर

नेपाल में राजकुमार 'राजन' सम्मानित

नेपाल के जनकपुर में आयोजित छठे सोशल मीडिया मैत्री सम्मेलन में देश-विदेश की साहित्य-कला के क्षेत्र की एक सौ एक प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। इसमें राजकुमार जैन 'राजन' को हिंदी साहित्य में उल्लेखनीय सृजन, संपादन, प्रकाशन, सम्मान-समारोह आयोजन एवं बाल साहित्य उन्नयन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए याद किया गया।

अपने उद्बोधन में राजन ने कहा कि यदि बालकों को साइबर-दुनियां के खतरों से बचाना है तो उनमें पठन-पाठन की रुचि विकसित करने वाला उत्कृष्ट बाल-साहित्य उपलब्ध कराना होगा। राजन ने भारत-नेपाल के साहित्यकारों के बीच एक सेतु की भूमिका निभाई। उनकी लिखी बालसाहित्य की कई पुस्तकें कई भाषाओं में अनुदित हो चुकी हैं।

आओ, जरा हंसलें

-दो वर्षीय पार्थ के सवाल-दर-सवाल करने पर उसकी मम्मी परेशान हो गई। झल्ला कर बोली-'चुप रह, माथा मत खा।' पार्थ सहज भाव से बोला-'माथा नहीं, मैं तो परांठा खा रहा हूं।'

- सेंडी ने अपने दोस्त से कहा-'आ, अपन घोड़ा-घोड़ा खेलें।' प्रखर बोला-'कहां है घोड़ा? क्या तू घोड़ा है?' सेंडी ने जवाब दिया-'नहीं, मेरी मम्मी तो मुझे गधा कहती है।' प्रखर ने हाजिर जवाब दिया-'हां यार, मुझे भी मेरी मम गधा ही बोलती है।' सेंडी बोला-'तो फिर गधा-गधा खेलें।'

- आरजु सान्वी और तान्या नामक तीन सहेलियां खेलती-खेलती मकान मालिक के किस्से सुनाने लग गईं। आरजु बोली- एक मकान मालिक रोज रात को दो-तीन चक्कर लगाकर किरायेदारों के कमरों को नीचे से झांक-झांक कर देखता कि कहीं लाईट तो नहीं लग रही है। इस बात का पता वहां पढ़ने वाले लड़के को चला तो वह छुट्टियों में घर जाते समय खाली पीपे में लट्टू जलाकर चला गया कारण कि एक दिन जब वह रात्रि को दो बजे तक पढ़ाई कर रहा था तो मालिक मकान ने सुबह उसे बुरी तरह डांटा और कहा कि रात सोने के लिए होती है, लाईट जलाने की नहीं।

- यह सुन तान्या बोली- हमारे पास एक मकान मालिक ऐसा था जिसने सुबह चार बजे के समय आव देखा न ताव अपना मेन मीटर ही बंद कर दिया। इतने में किरायेदार बाहर आया तो मकान मालिक झल्लाया। कहा, लाईट जलाने का यह कोई वक्त है। किरायेदार बोला, पांच बजे की बस से मुझे जाना है सो मैं खाने के लिए परांठे बना रहा था। मकान मालिक बोला, सो तो ठीक है मगर दूसरों को डिस्टर्ब होता है। वह बोला, सो कैसे? सब तो सोये हुए हैं? उसने उत्तर दिया, जैसे मैं जगा हुआ हूं। इस पर तपाक से किरायेदार ने तुरप फैंकी, तो ये लो दो परांठे, इन्हें खाकर सो जाओ।

- सान्वी चुपचाप दोनों की बातें सुनती रही। अंत में बोली- तो लगे हाथ मैं भी एक किस्सा सुना दूं। दोनों बोली- हां-हां, तुम पीछे क्यों रहो! चलो सुनाओ।

वह बोली-एक छात्र ने दो कमरे किराये लिये। शर्त रखी कि वह लाइट का प्रयोग एक ही कमरे में करेगा सो एक का ही बिजली खर्चा देगा। महीनेभर बाद किराया लेने मकान मालिक आया। छात्र ने एक कमरे की लाईट का पैसा दिया तो मकान मालिक बोला-दोनों कमरों की लाईट का पैसा लूंगा। यह सुन छात्र अचरज भरी परेशानी में पड़ गया। बोला, लाईट का उपयोग तो मैंने एक ही कमरे में किया था। मकान मालिक बोला, सो तो ठीक है पर जिस कमरे में लाईट जलानी थी उसमें नहीं जलाकर दूसरे कमरे में जलाई सो दोनों का किराया देना पड़ेगा। लड़का बिचारा क्या कहता। मन मसोसकर दोनों का किराया दिया।

तीनों बोलीं- कैसे-कैसे मकान मालिक होते हैं।

बारह माह देहरी-दीवार, घर-आंगन सिणगार

- डॉ. कहानी भानावत -

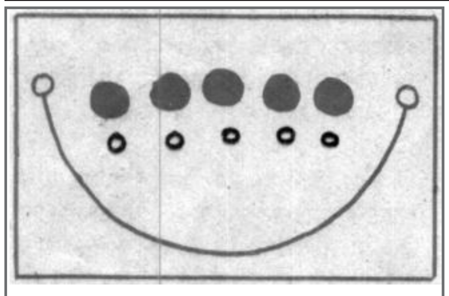

आसमाता

मनुष्य का भीतरी और बाहरी जीवन एक जैसा नहीं होता। भीतर का अन्तस शुद्ध पवित्र सद्विचारी तथा सार्थक कर्म करने को प्रेरित होता है जबकि बाहर का मन कई प्रकार के द्वन्द्व-फंद, छल-छद्म, राग-द्वेष से आपूरित रहता है और कई ऐसे कार्य कर गुजरता है जो सुकृत्यकारी नहीं होकर निन्दनीय होते हैं।

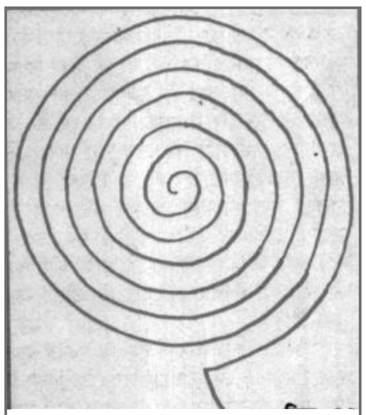

ब्रह्मा दादा

यों मूलत: मनुष्य का मन धर्मजीवी है। संगति और संस्कारों की वजह से भी उसे अच्छे-बुरे कर्म करने की प्रेरणा मिलती है तथापि वह पाप-कर्म से भयग्रस्त होकर प्रायश्चित के रूप में या उसका जीवन शुद्ध बना रहे, इसलिए देवी-देवताओं की शरण पकड़ता है और प्रतीक रूप में उनकी प्रतिछवि के आगे नत-वन्दन किये रहता है। ये प्रतीक उनके पौराणिक स्वरूप का आधार लिए परम्परागत रूप से विविध छवियों में कभी घर के आंगन में, देहरी में तो कभी दीवालों पर बनाये जाते हैं। इनके साथ विविध त्यौहार उत्सव अनुष्ठान जुड़े मिलते हैं।

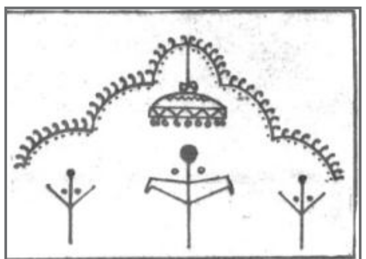

चूल्हे के भैरू

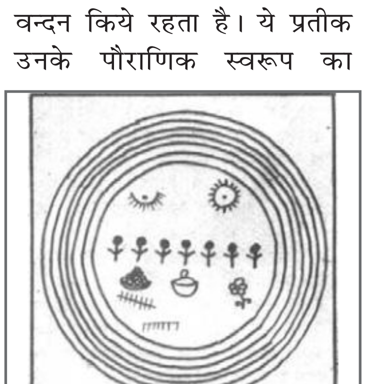

आई माता

ये प्रतीक जाति, समूह एवं वर्णगत मान्यता तथा आंचलिक परिवेशजनित स्थापना, आस्था, घटना से प्रभावित होकर बड़ी आस्था और अटूट विश्वास के साथ कहीं हिंगलू, कहीं कुम्कुम्, कहीं काजल, सिन्दूर, घी, गोबर, रोली, मिट्टी, फूल आदि से बनाये जाते हैं। जो सम्बन्धित देव-देवी के साथ घर-परिवार में शान्ति, सुख देने के साथ धन-धान्य की ऋद्धि-समृद्धि करने वाले मंगल भावनाओं के कारक होते हैं।

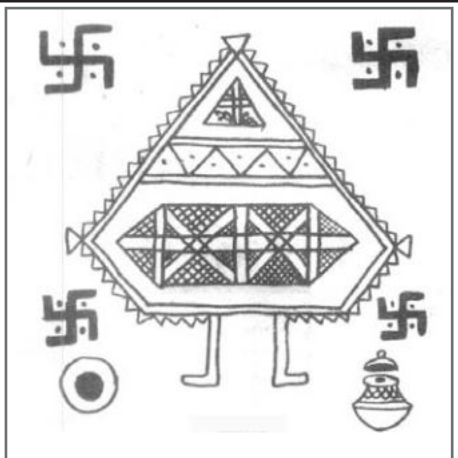

दशहरा

राजस्थान में ऐसे प्रतीकों के विविध रूप मिलते हैं जिनके साथ विविध कथा, किस्सों, मान्यताओं, मिथकों, गीतों भरे अनेक दास्तान सुनने को मिलते हैं। इनका चितरावण हाथ की अंगुली से लेकर नीम, खजूर, पीपल, बड़ की पतली टहनी तथा पारम्परिक तरीकों से निर्मित रंगों की सहायता से बड़े ही आकर्षक तथा सौंदर्यवर्धक रूप लिये होता है। रंग-रेखाओं के इस कमाल में ग्राम्य संस्कृति की सर्जना देने वाला महिला समुदाय प्रमुख भागीदारी लिये होता है। इन प्रतीकों में स्वस्तिक अथवा सातिये का प्रचलन सर्वाधिक सर्वत्र मिलता है। रसोई, परिंडा स्थल, द्वार के बीचोंबीच स्वस्तिक का अंकन अवश्य मिलेगा। पूजा के समय चावलों का या फिर अन्य धान्य का स्वस्तिक प्रचलित है। चूल्हे के पास की दीवाल के ऊपरी ओर कुल देवता के रूप में भैरूजी का अंकन किया जाता है। कहीं-कहीं इनके दोनों ओर काला गोरा भैरू बनाये जाते हैं। इनके गुड़ के चूरमे का भोग लगता है। ये सिन्दूर में तेल के घोल से बनाये जाते हैं।

चैत्र और अश्विन में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को नवरात्रा की स्थापना पर नौ देवी के रूप में गृह-मंदिर अथवा रसोईघर में या फिर खुली अलमारी को सफेद माटी से पोत कुंकुम या सिन्दूर से माताजी का चित्रांकन बनाते हैं। नौ ही दिन पूजा, अखंड दीप, कन्या-भोजन के आयोजन होते हैं। होली के बाद धुलण्डी से गणगौर-पूजन शुरू होता है। इस मौके पर गोबर लीने स्थान पर सफेद मिट्टी से अंकन किया जाता है। शीतलाष्टमी को माता शीतला का चेचक की देवी के रूप में बच्चों के स्वस्थ-सुख के लिए चितराम किया जाता है। दीवाल के अंकन में माता की गधा-गाड़ी में सवारी दिखाई जाती है। इस दिन माताएं ठंडा भोजन करती हैं।

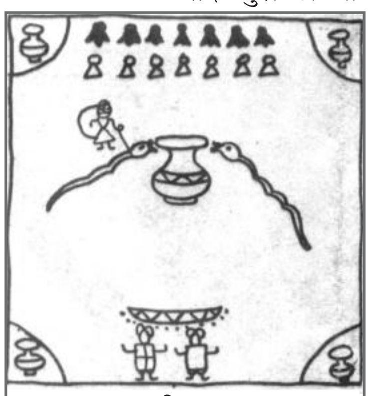

दुबड़ी सातम

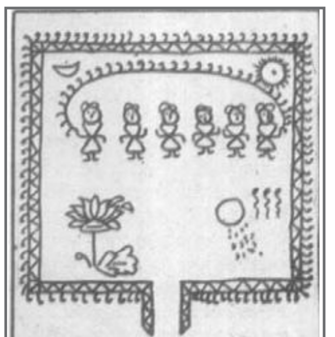

ऋषि पंचमी

धींगा गणगौर का थापा भी बनाया जाता है। धुलण्डी से ही दस दिन तक दशामाता का अंकन और कथा श्रवण प्रारम्भ हो जाता है। गृहदशा अनुकूल बनाये रखने के लिए दशादेवी की मान्यता है। पहले रविवार को डाड़ा या दिन के देव सूरज का व्रत कर सूरज-रोट का अंकन और जमीन पर गोबर-गोलाई में काजल तथा रोली की नौ-नौ बिंदियां बनाई जाती हैं।

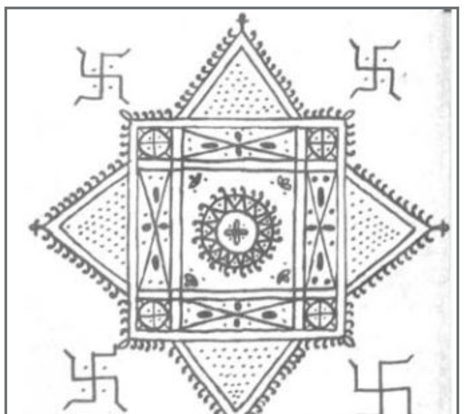

देवउठनी

होली के बाद चतुर्थी को माताएं दीवाल पर काजल-कुमकुम की पांच-पांच बिंदियों की प्रतीक आसमाता की पूजा करती हैं। श्रावण में शुक्ल या फिर कृष्ण पक्ष की पंचमी को नागपंचमी के दिन द्वार के दोनों ओर कोयले या फिर काली स्याही से नाग का चित्रण करती हैं। पानी के घड़े पर भी कोयले-कुमकुम से नाग बनाकर कच्चे दूध, भीगे चने, मोठ-बाजरे से पूजा करती हैं। भाद्र कृष्णा पांचम को गूगा के रूप में दीवाल पर कोयले से पांच नागाकृतियां बनाई जाकर जल, कच्चा दूध, रोली, चावल, बाजरा, आटा, घी, चीनी आदि से पूजा की जाती है।

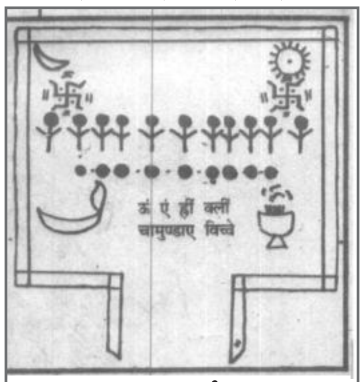

नवदुर्गा

भाद्र शुक्ला सातम को आंगन पर एक तरफ दुबड़ी मैया का अंकन किया जाता है। मैया के साथ बाल-सर्प एवं मटके का चित्र बनाया जाता है। पूजा कर दुबड़ी माई की कहानी सुनी जाती है। इससे पूर्व पंचमी को ऋषि पंचमी पर सप्त ऋषियों का पूजन किया जाता है। दीवाल पर रोली से एक घर, उसमें पांच ऋषि और एक महिला बनाई जाती है। श्राद्धपक्ष में बालिकाएं प्रति संध्या को दीवाल पर गोबर की सांझी बनाकर भांत-भांत के फूलों से सजाकर व्रतानुष्ठान करती हैं।

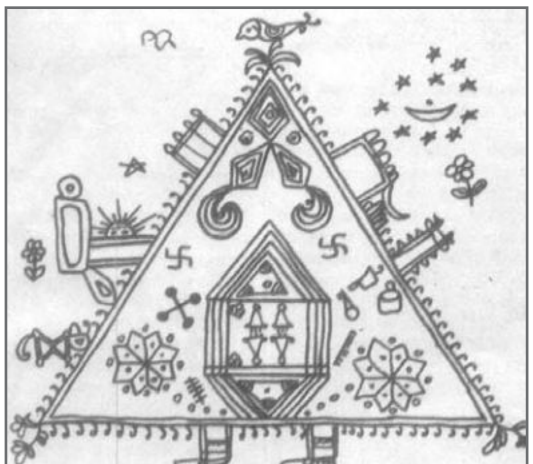

सांझी

अश्विन शुक्ल दसमी को दशहरे पर आंगन के एक ओर की लींपाई पर चित्रांकन कर पूजा करती हैं।

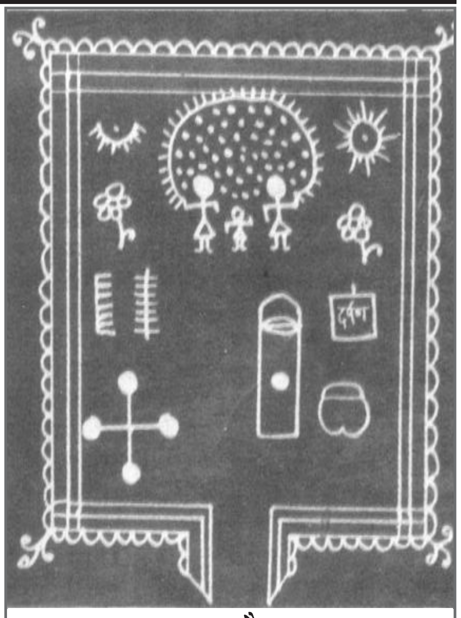

गणगौर

दीवाली पर तो क्या आंगन और क्या दीवाल सभी ओर लक्ष्मी, पगल्ये और दीपकों के साथ सिक्कों के माण्डणों की बहार मिलती है। लगता है, लक्ष्मीजी अपने साथ लाये धनरूप-सिक्कों की बरसात करती पधारी हैं। दीवाली के दूसरे दिन गोरधन पूजा में मुख्य द्वार पर गोबर के मोटे-बड़े गोरधन और उनका पुत्र बनाया जाकर पूजा जाता है।

कार्तिक शुक्ल एकादशी, देव जागणी ग्यारस को जमीन पर लाल मिट्टी से तुलसी-विष्णु का चित्र बनाकर पूजती हैं। इस दिन तुलसा-विवाह भी किया जाता है।

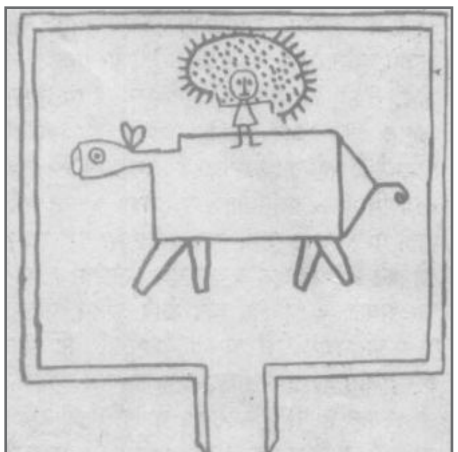

सातिया

माघ शुक्ला सातम, माघी सातम को घर के एक तरफ गोबर के चौके पर सफेद मिट्टी से भाई की स्थापना कर मैदे चीनी व घी से तैयार बेर, खेड़ी से पूजा करते हैं। इस दिन सूर्योपासना करने से ब्रह्म दादा का प्रतीक चिन्ह बनाते हैं। विवाह-शादी पर देवता के रूप में गणेशजी की स्थापना और फिर मातृका स्थापित की जाती है। पंडित द्वारा दीवाल पर घी से पांच लाइनें, ऊपर गोबर से पांच मुख बना लाल वस्त्र, रुई, मोली से पूजा की जाती है।

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 15 अप्रेल 2018

सम्पादकीय

फूलों में कौनसा फूल बड़ा......

राजस्थान में बगड़ावत महाभारत की कथा कंठासीन बनी अत्यन्त लोकप्रिय है। इस गाथा की केन्द्र बिन्दु जैमती है जैसे रामायण में सीता और महाभारत में द्रोपदी है। यह वह समय था जब एक औरत के लिए संभ्रान्त कुल के अपने पति को त्याग कर किसी अन्य पति का वरण करना एक गम्भीर अपराध था बल्कि सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थिति में एक भयानक विस्फोट था।

बगड़ावत चौईस भाई थे। इनके नाम से भीलवाड़ा-आसीन्द क्षेत्र में चौईस गांव बसे हुए हैं। सभी भाई एक-से-एक बढ़चढ़ कर योद्धा थे। जैमती उनमें से एक सवाई भोज पर आसक्त थी। वह दासी हीरां को भेज बुद्धि परीक्षा के लिए पूछना कराती है- 'फूलों में कौनसा फूल श्रेष्ठ है'। भोज का भाई नीया उत्तर देता है, सर्वश्रेष्ठ फूल है गाय जिस पर सारी अर्थ व्यवस्था टिकी हुई है। उसके बछड़ों के बल पर ही पूरी कृषि निर्भर है। सर्वश्रेष्ठ फूल है घोड़ी जिसकी शक्ति पर राज्य टिके हुए हैं। सर्वश्रेष्ठ फूल है सूरज जिसके निकलते ही नर-नारी काम पर लग जाते हैं। सर्वश्रेष्ठ फूल है कपास जिसके कपड़े से संसार अपना तन ढकता है। सर्वश्रेष्ठ फूल है वर्षा जिसके अभाव में सारे फूल कुफूल हो जाते हैं।

युगयुगीन सन्दर्भ में देखें तो समय बड़ा बलवान होता है। आज की स्थिति में यदि आदिवासी क्षेत्र में पूछना करें तो वहां महुए का फूल सर्वश्रेष्ठ है जिसका अंग-प्रत्यंग ही नहीं, छांह और छाया तक जीविकोपार्जन के लिए जरूरी है। सर्वश्रेष्ठ फूल है शिक्षा जिसके बिना विकास की बात नितान्त बेमानी लगती है। ऐसे ही बात को आगे से आगे बढ़ाने के लिए आप पूछ सकते हैं दलों में कौनसा दल सर्वश्रेष्ठ है? उत्तर पाने के लिए कई एजेन्सियां लगी हुई हैं। यों अगले चुनाव तक प्रतीक्षा करिये, पता लग जायेगा।

भूखे को अन्न दान, श्रेष्ठ दान

-मुनि मनितप्रभ सागर-

'भूखे पेट भजन न होय गोपाला' इस लोकोक्ति से स्पष्ट है कि दानों में विद्यादान भी है, अभयदान भी है पर अन्न दान की महिमा निराली है। अन्न यदि पेट में न हो तो चिन्ता, अस्वस्थता, अन्यमनस्कता आदि कारणों से संयम की साधना नहीं हो सकती। जब जोरदार भूख लगती है, तब पूर्णिमा के पूर्ण चन्द्रमा में गोल-गोल रोटी दिखाई देती है। तारों में भिण्डी की सब्जी नजर आती है। भूखे व्यक्ति को न तो पैसा पसन्द आता है, न पत्नी, न पुत्र और परिवार।

एक राजा ने रास्ते में बैठे भूखे भिखारी को स्वयं के शरीर पर रहा हुआ मूल्यवान दुशाला दान में दिया। यह देखकर मंत्री हंस पड़ा। राजा ने कहा- 'मंत्रीवर! तुम हंस क्यों रहे हो?' मंत्री ने कहा- 'राजन्! इस सवाल का जवाब कल दूंगा।'

दूसरे दिन राजा और मंत्री उसी रास्ते से जा रहे थे जिस मार्ग पर भिखारी बैठा था। मंत्री ने कहा-'राजन्! इस भिखारी से आप पूछिये तो सही कि कल जो अनमोल दुशाला दिया था, वह कहां है?' राजा के प्रश्न का उत्तर देते हुए भिखारी बोला- 'राजन्! मैंने तो वह दुशाला बेच दिया। हकीकत में मुझे भूख लगी थी पर वह दुशाले से कैसे मिट पाती। अत: मैंने उसे बेच दिया, परिणामत: जो धन मिला, उससे मैंने पेट भर भोजन कर लिया।'

मंत्री ने राजा से कहा-'राजन! कल मेरे हंसने का यही कारण था क्योंकि भूखे को दुशाला देना अनुचित है। भूखे को भोजन का एवं रोगी को दवाई का दान दिया जाता है पर दुशाला तो सर्दी में ठिठुरते व्यक्ति को दिया जाता है। अन्न दान से अन्न पुण्य का बन्ध होता है। इस दान से व्यक्ति अकाल-दुष्काल में भी भूखा नहीं रहता। उसके भण्डार धान्य से भरे-पूरे रहते हैं।'

भारंड और घुघुतिया

-डॉ. तुक्तक भानावत-

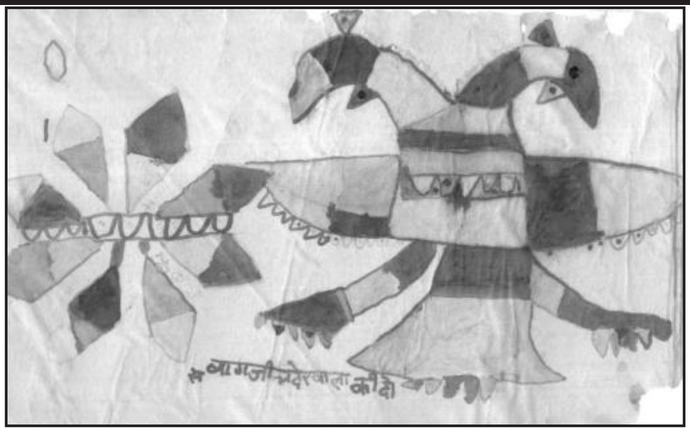

भारंड चिमगादड़ से पंख वाला दो मुंहा अद्भुत पक्षी होता है। अपने पंजों से हाथी जैसे बलिष्ठ जानवर को ले आकाश में उड़ सकता है। तीन पांव तथा दो गर्दन वाला यह पक्षी जैन कथाओं में बड़ा चर्चित है और अप्रमाद का प्रतीक होने से साधुओं को इसकी उपमा दी जाती है। रेगिस्तान में प्राचीन हवेलियों में इसके भित्तिचित्र मिलते हैं।

कुमाऊं क्षेत्र में मकर संक्रान्ति के दूसरे दिन घुघुतिया नामक त्यौहार मनाया जाता है। घुघुत नाम का राजा था जिसकी मृत्यु ज्योतिषियों ने काले कौए से होना बताया। मारक घड़ी को टालने के लिए पंडितों ने कहा कि संक्रान्ति के दूसरे दिन गुड़ मिले आटे के मीठे मिभौरे घुघुते (गुलगुले) बनाकर कौओं को खिलाया जाय ताकि वे खाने में व्यस्त रह मृत्यु-घड़ी को विस्मृत कर जायें। इससे राजा बच जायेगा।

ऐसा ही हुआ। राजा बच गया। उसी खुशी में यह त्यौहार मनाया जाने लगा। राजा की स्मृति के जुड़ाव के कारण इस त्यौहार का नाम भी घुघुतिया पड़ गया।

इस दिन कुमाऊं अंचल में घर-घर पक्षियों के लिए नाना प्रकार के पकवान बनाये जाते हैं। शीत ऋतु में पक्षी भी कहीं दूर चले जाते हैं। लोग आवाज दे-देकर उन्हें बुलाते हैं-

'काले कौवे का'ले / आजा घुघुत खाले /
मीठे-मीठे गुलगुले / राजा परजा सभी भले।'

संस्कृति बचेगी तो संस्कार बचेंगे और सब संस्कारित होंगे। यह दायित्व युवाओं पर अधिक है।

सिटी पेलेस में क्रिस्टोफर और टेसिटा

उदयपुर। हॉलीवुड के विख्यात हस्ती क्रिस्टोफर और टेसिटा ने अरविन्दसिंह मेवाड़ से मुलाकात कर उदयपुर में शूटिंग एवं उसके इतिहास पर विशेष चर्चा की। चर्चा के दौरान बॉलीवुड में पुरानी फिल्मों के उत्कृष्ट संयोजक शिवेन्द्रसिंह डूंगरपुर भी उपस्थित थे। क्रिस्टोफर द्वारा निर्मित कई फिल्में ऑस्कर अवार्ड के लिए चयनित है। टेसिटा डीन ने हॉलीवुड की अनेक फिल्मों में कई अवार्ड जीते हैं। शिवेन्द्रसिंह इंटरनेशनल फेडरेशन एवं फिल्म आर्काइव्स के अध्यक्ष हैं।

अरविन्दसिंह मेवाड़ ने उदयपुर एवं मेवाड़ के अनेक पर्यटन एवं ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी देते हुए बताया कि यहां की गई फिल्मों की शूटिंग को विश्व में शोहरत मिली है। दोनों कलाकारों ने सिटी पैलेस संग्रहालय एवं क्रिस्टल गैलेरी का अवलोकन कर भूरि-भूरि प्रशंसा की।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
गवरी	60/

मैं युवती हो गयी थी

-नथमल केड़िया -

मैंने यौवन की देहरी पर अभी पग भी नहीं रखा था कि तुम जीवन में आये। उस दिन किशोर वय के खेल खेलते-खेलते हम लोग नदी तट पहुंच गये। सांस की बेला हो आई थी। हम लोग कौतुक-कौतुक में दीप प्रज्वलित कर उन्हें दोनों (पत्तों) में रख, जल में प्रवाहित करने लगे। ओह! कितना आनन्द होता था जब मेरा दीप तुम्हारे दीप से आगे निकल जाता था। मैं उल्लासपूर्वक तुम्हारी ओर देखने लग जाती थी और उसी तरह तुम भी मुस्करा कर मेरी ओर देखने लग जाते थे जब तुम्हारा दीप आगे निकल जाता था। और तब न जाने किस अदृश्य से संचालित हो तुम्हारा दीप और मेरा दीप एक-दूसरे से सटकर साथ-साथ बहने लगे थे। उन्हें देखकर मेरे गाल लज्जा से लाल हो उठे थे। शायद तुम्हें नहीं मालूम उसी क्षण मैं युवती हो गई थी।

पोथीखाना

हाड़ौती लोकगीतों की रसवन्ती धारा

किसी भी समाज, सभ्यता एवं संस्कृति के जीवन चक्रीय अध्ययन में लोकगीत सर्वाधिक महत्वपूर्ण दृष्टिगत होते हैं। समूह की थाती के रूप में लोकगीतों की संरचना जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किये रखती है। कोई भी त्यौहार, उत्सव एवं मंगलाचार का आयोजन हो, लोकगीत उसे श्रीवंत, प्राणवंत तथा प्रभावपूर्ण बनाते हैं। इस दृष्टि से लोकजीवन में लोकगीत प्राण-रस प्रेम-रस का संचार किये रहते हैं। यही कारण है कि लोकगीत निर्विवाद निर्बाध एवं सर्व लोकप्रिय बने हुए हैं।

अपनी धरोहर की धन्यता और विरासत की वैविध्यता में राजस्थान अन्य सभी प्रान्तों से अग्रिम पंक्ति लिये है। यहां लोकगीतों पर सर्वाधिक संकलन, अध्ययन, अन्वेषण, पर्यालोचन एवं प्रकाशन हुआ है। यहीं के लोकगीत संगीत ने सर्वप्रथम अंचल से अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनाई और राजस्थान के प्रजास्थान ने अतिथि देवो भव के गौरवमय अतीतादर्श को अक्षुण्ण बनाये रखकर विश्व पर्यटकों को 'पधारो म्हारे देस' की पधरावणी दी। यहीं की 'धरती धोरां री' के कण-कण में व्याप्त 'केसरिया बालम' की मांड-रंगी खनक, जो भी यहां आता है, उसे सदा-सदा के लिए सौंधी बना देता है।

इन लोकगीतों के सहारे न जाने कितनी विरहणियों ने गीतों के सहारे कुरजां, सुआ, कागला, बगुला, तीतर, पपीहा और हंस के साथ आंसुओं का सींचन देकर तिल-तिल सन्देश पहुंचाये हैं। यौवन की देहरी में प्रवेश करती नवोढ़ाओं ने अंगड़ाइयों की रेखा से न जाने कितने गुड्डे-गुड्डियों का ब्याह रचाकर अपनी भावी गृहस्थी की अनजान रचना की है। प्रेमी-प्रेमिकाओं की कस-कांचली ने न जाने कितनी बार प्रेम-रस मेहंदी को रचनी बनाया है। ढाढ़ियों की सारंगी, जोगियों के तानपुरे, भोपों की मशक, थोरियों के रावणहत्थे, मांगणियारों के मोरचंग, लंगों की खड़ताल, माताओं की लोरियों-प्रभातियों, जच्चों के बधावों, कुल बहुओं के कंकू छांटी कंकोतरी से लेकर हल्दी-पीठी के रंगे-सुरंगें बना-बनी तथा मृतक के भंवरे को ठिकाने लगा सुगत देने तक के दस्तूरों में लोकगीतों ने समस्त समाज को ही गीतमय बना दिया। गज भर के घूंघट और गज भर की गाती की आड़ में बात और बोली द्वारा जो कुछ नहीं कहा सुनाया जा सका वह गीतों के माध्यम से पेश कर दिया गया। इस प्रकार लोकगीतों ने हमारे जीवन के हर पक्ष को जी खोल कर प्रभावित किया है।

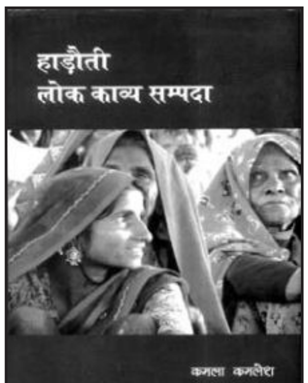

आजादी के बाद हर क्षेत्र में बदलाव आया है तो गीत कैसे अछूते रह जाते। अब गीतों में रथ की सवारी की बजाय मोटरगाड़ी, रेल और हवाई जहाज हिये से लग रहे हैं। आठी डोरा कांगसी की बजाय भांत-भांत के शैम्पू और साबुन महिलाओं की गर्वोक्ति बन गये हैं। केलड़ी, कंडे वाली रसोई अब सो गई है। क्रॉकरी, कूलर, फ्रिज वाली रसोई में टी.वी. में छविमान सौंदर्य-प्रसाधनों से लकदक महिला महक रही है। अब आंचलिक वाणियां अपने वैभव का विस्तार लिए भाषा का भेष-वेश धारण करने में लगी हैं। ऐसे में बोली और भाषा की दूरी एक नये सेतु को संवार रही है। नई भाषा, नई वाणी, नई बोली की राग और रंगत में सबके ही रूपांकन नव्य लसित हुए जा रहे हैं। ऐसे बदलते मौसम में प्रस्तुत लोकगीतों का संग्रह स्वागत योग्य है।

हाड़ौती के प्रतिनिधि संग्रह के रूप में श्रीमती कमला कमलेश ने इसे मेहनत और मनोयोग से सम्पादित किया है। उनका महत्वपूर्ण पक्ष है कि आजादी से पूर्व के लोकगीतों की जीवनधारा को जिस ठाठ-ठसक से देखा, परखा, जिया, भोगा है उसी आंख-पांख से परम्पराशील आधुनिक होते गीतों की गंगा-गंगोत्री को अपनी अन्तश्चेतना से गहवारा है।

पितृगृह में मां, दादी, नानी तथा श्वसुर गृह में सास, बड़ी सास के सान्निध्य में कमलाजी ने लोकगीतों के बहलाव और बदलाव की रफ्तार को स्वर-माधुर्य दिया है। नई बहू-बेटियों के परिवर्तित होते गीतों ने मन के मनोविनोद में भी अपनी उपस्थिति को अनुगुंजित किया है। इन गीतों में सभी तरह के लोकाचारों, मंगलाचारों की बानगी देखने को मिलेगी।

हाड़ौती अंचल, राजस्थान का एक विशिष्ट और नामचीन अंचल है। लोकगीतों के माध्यम से इसके वे ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पक्ष उद्घाटित हो सकेंगे जो अब तक अल्पज्ञात अथवा अज्ञात रहे हैं। यही नहीं, इस संग्रह से प्रेरणा लेकर अन्य अंचलों के लोकगीतों के भी स्वतंत्र संग्रह प्रकाशित होंगे। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से भी आगे चलकर इनकी उपयोगिता के विविध आयाम उद्घाटित होंगे।

आशा है, इस संग्रह के प्रकाशन से हाड़ौती में फिर से उन गीतों की रसवंती धारा बह निकलेगी जिसका प्रभाव नई चलन के गीतों के कारण दब सा गया, थम सा गया है। लेखिका का यह सुचिंतनीय प्रयास सर्वप्रकारेण अभिनंदनीय है।

हाड़ौती लोक काव्य सम्पदा, कमला कमलेश, बोधि प्रकाशन, जयपुर मूल्य 200 रूपये।

इस हाट से हटकर

सृजन प्रकाशन केन्द्र कोटा के संस्थापक बृजेन्द्र कौशिक साहित्य संरचना में अपनी निराली पहचान रखते हैं। उनका प्रमुख स्वर तो छन्दबद्ध कविता ही है। एक गीतकार की हैसियत से उन्होंने श्वेतपत्र, साक्षी है सदी तथा ओ सुबह की हवा जैसे संग्रह दिये हैं वहीं चार गज़ल संग्रह- हम भी नहीं मोम की मूरत, कहना है जो जरूरी, सबके सपने जैसे अपने तथा सरोकार।

दूसरों के सहारे नहीं तथा खोल दी हैं खिड़कियां के अलावा दोहा संग्रह- रु-ब-रु आपसे, मुक्त त्रिपदियां नहीं असम्भव कुछ तथा नये छन्द में- किस घाट उतरें तथा हाट से हटकर के अलावा उत्तर कांड के बाद, सितम्बर 89 और वह कैसी है कहानी संग्रह दिये हैं।

हाट से हटकर ताजा प्रकाशन है। इसके लिए कौशिकजी लिखते हैं-'हाट से हटकर के लिए एक अलग गीत-रूप की रचना की गई है। पूरे संकलन का हर छन्द आठ पंक्तियों का है। प्रथम दो पंक्तियां खण्ड-पंक्तियां हैं। तीसरी-चौथी पूर्ण होने के साथ तुकांत हैं तथा पांचवीं-छठी पुन: खण्ड पंक्तियां हैं जो मुक्ता हैं। सातवीं पंक्ति जहां पूर्ण पंक्ति है वहीं प्रथम दूसरी खण्ड पंक्ति से तुकान्त है और आठवीं पंक्ति प्रथम दोनों खण्ड-पंक्तियों की संयुक्त-पंक्ति के रूप में पुनरावृत्ति है। इस छन्द की सभी पंक्तियां सर्वत्र सोलह-सोलह मात्राओं की है। मात्रा-गणन में खण्ड पंक्तियों को एक पंक्ति माना गया है।' इस प्रकार -

चलो संभल कर / धीरे-धीरे / शासक गूंगे बहरे अंधे / सड़कों से / संसद तक पहुंचे / गुंडे चोर उठाईगीरे / चलो संभलकर धीरे-धीरे (पृ.9)

हां, पुस्तक के अन्त में लिखा है- कौशिकजी का साहित्य बेचने के लिए नहीं है लेकिन शोधार्थी निशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

खोज-खबर

देवेन्द्र सत्यार्थी का साहित्यिक झोला

देवेन्द्र सत्यार्थी की बहुप्रसिद्धि प्रान्त-प्रान्त भ्रमण कर लोकगीतों के संग्रहक के कारण रही। इस क्षेत्र में उनका सर्वाधिक तथा सर्वप्रथम योगदान रहा। उनकी लोकगीतों की पंक्तियांपरक पुस्तकें आज भी अपना वजूद रखती हैं। मेरे जैसे अनेक लोग जो लोक क्षेत्र में आये, उनसे कई तरह की प्रेरणा ग्रहण की लेकिन उनसे मिलना तो उदयपुर में ही हुआ।

सन् 1967 में जब डॉ. हरीश राजस्थान साहित्य अकादमी के डायरेक्टर थे तब सत्यार्थीजी यहां चार माह रहे। इस दौरान वे भारतीय लोककला मण्डल भी मिले और इतर-उतर के समारोहों में भी उनसे भेंटें हुईं। उनकी लम्बी दाढ़ी, धोती-कुरता के अलावा कन्धे पर झोला लटका रहता जो उनकी खास पहचान बना हुआ था। झोले में कई चीजें रहतीं। उनकी कहानियां, कविताएं, कागज की चींदियां, गोंद की शीशी, कैंची तथा पेंसिल, पेन, रबड़ तो मैंने देखे पर और भी करके 10-12 किलो सामान का बोझा उसमें सदैव बना रहता।

डॉ. हरीश इससे पूर्व यहां महाराणा भूपाल कॉलेज में हिन्दी के प्राध्यापक थे। मैंने 1961-62 में हिन्दी में एम.ए. किया तब नरोत्तमदास स्वामी, डॉ. प्रकाश आतुर, विष्णुराम नागर, डॉ. मूलचन्द पाठक, डॉ. कृष्णचन्द श्रोत्रिय, डॉ. राधाकृष्ण दुग्गड़ और डॉ. हरीश हमारे गुरु थे। देवेन्द्र सत्यार्थी यहां डॉ. हरीश के मेहमान बन रहे।

इलाहाबाद निवासी श्रीकृष्णदास के सत्यार्थीजी मित्र थे और डॉ. हरीश श्रीकृष्णदासजी के दामाद थे सो सत्यार्थीजी उस सम्बन्ध से यहां बेधड़क बने रहे। उदयपुर में सत्यार्थी मुझे कतई वे देवेन्द्र सत्यार्थी नहीं लगे जिन्हें पढ़-सुन कर मेरा मानस बना था। यहां तो वे जहां भी, जिससे मिलते अपने झोले से अपनी कहानी, कविता सुनाते। सुनने वाले को अपनी राय पूछते। वह जो कुछ कहता, उसके अनुसार कहानी, कविता में फेरबदल करते रहते। ऐसी कई चिंदियां कविता-कहानी के कागज के पीछे, आस-पास, ऊपर-नीचे गोंद से चिपकी देखी। मैंने तो उनकी वह कहानी जिसका शीर्षक 'सफेद हाथी' था, कोई 30-40 पृष्ठों में लिखी देखी।

यहां उनसे मिलने वाले वो के वो ही थे तो सुनने वाले भी वो के वो सो धीरे-धीरे लोग उनसे बोर भी होने लगे। डॉ. हरीश भी कम बोर नहीं हुए। उन्होंने रंजक रूप में मुझे कहा भी, महेन्द्र तुझे क्या बताऊं, कभी-कभी तो वे मेरे कपड़े-लत्ते, पाजामा ही पहने रहते। एक दिन तो मैं अपने चप्पलों को ही बड़ी बेसब्री से ढूंढ़ता रहा।

आज भी सत्यार्थीजी को मैं भूला नहीं हूं। मुझे यह भी लगता है कि जिन लोकगीतों का उन्होंने प्रान्त-दर-प्रान्त घूम-घूम कर धूमधाम से संग्रह किया उनमें बहुत सारी पंक्तियां पिश्चय ही उन्होंने जोड़ी होंगी। कोई उन पोथियों का तसल्लीपूर्वक अध्ययन करे तो यह अध्ययन भी कम दिलचस्प नहीं होगा।

पद्मिनी 'पूगल' की कन्या

चित्तौड़गढ़ की रानी पद्मिनी को पूगल की कन्या कहा गया है। कई लोकगीत और जनश्रुतियों में भी इस तरह के कथन मिलते हैं। प्रो. मथुराप्रसाद अग्रवाल ने राजस्थान के प्रेमाख्यानों पर अध्ययन करते समय भी मुझसे इस तरह का जिक्र किया था। 'पूगल देश री पदमणी' लोककथाओं में भी कई बार सुनी गई।

बीकानेर के किशनकुमार व्यास ने अपने फरवरी 1983 के लिखे पत्र में पूगल पर एक टीप भेजी थी जिसे मैंने रंगायन के मार्च 1983 के अंक में प्रकाशित की थी। शीर्षक था- 'नारी सौंदर्य के लिए प्रख्यात पूगल।'

इसमें श्री व्यास ने लिखा कि नारी-सौंदर्य के लिए पूगल शब्द ढोलामारु की गाथा में कई बार आया है। मरुधरा की गोद में बसा पूगल नगर बीकानेर जिले का महत्वपूर्ण नगर है जो भारत-पाक सीमा से सटी धरा पर है। यहीं ढोला से मिलने की मरवणी की इच्छा और आकांक्षा साकार हुई। बीकानेर के संस्थापक राव बीकाजी का ससुराल भी पूगल था।

रामदेवजी की बहिन सुगनाबाई पूगल के गहलोतों की ब्याहेता रही। रामदेवजी जब उसे लेने गए तो उस स्मृति को संजोये रखने के लिए एक मील पश्चिम की ओर देवालय बनाया जो भाई-बहिन की आत्मीयता की कहानी लिए है।

ऐसे ही पद्मिनी यहां की कन्या थी। समूचे मरु प्रदेश में पुरुष-महिलाएं आज भी उसके रूप सौंदर्य को विविध गीतों, कथाओं, गाथाओं के माध्यम से बखानती हैं। लाल पत्थरों से बना यहां का गढ़ ऊंचाई पर है। मुख्य द्वार पर खुदाई की चित्ताकर्षक कारीगरी देखते ही बनती है। करणी की विशेष अनुकम्पा से राव शेखा ने मन्दिर बनवाया। मंदिर में करणी द्वारा अपने हाथ से त्रिशूल की स्थापना की गई। यह त्रिशूल आज भी है। प्राचीन ताम्र किला रेतीले टीबों में दब गया है। राव शेखा मुल्तान के बन्दीगृह से मुक्त होकर आ रहे थे तब पांच पीरों ने उनका पीछा किया लेकिन वे मुल्तान नहीं जा सके और वहीं समाधिस्थ हो गये। इधर की राठी नस्ल की गायें दूध के लिए ख्यात रही हैं सो यहां दूध की बहुतायत है। कर्मेवाला, खाजूवाला, सियासर, चौगाना, दान्तौर, बल्लर, छत्रगढ़, सतासर, करणीसर भव्यिान आदि क्षेत्रों सहित समूचे पूगल की राजस्व आय की वृद्धि के स्वरूप सरकार ने यहां उप तहसील स्थापित की।

- म. भा.

टाटा एस गोल्ड ओरिजिनल 'छोटा हाथी'

उदयपुर। टाटा मोटर्स ने टाटा एस गोल्ड लॉन्च किया। यह वास्तविक 'छोटा हाथी' जिसने देश में एससीवी श्रेणी तैयार करते हुए नए मानक तय किए हैं। वाणिज्यिक वाहन कारोबारी इकाई के अध्यक्ष गिरीश वाघ ने कहा कि व्यापक शोध और ग्राहक मांग पर आधारित टाटा एस गोल्ड को ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पेश किया गया है। 3.75 लाख रुपये कीमत पर टाटा एस गोल्ड आर्कटिक सफेद रंग में उपलब्ध होगा।

गिरीश वाघ ने कहा कि पावर पैक्ड मिनी ट्रक टाटा मोटर्स अधिकृत डीलरशिप में बिक्री के लिए उपलब्ध होगा। बेहतर प्रदर्शन, मजबूती, बेहतर सुरक्षा और आराम से युक्त टाटा एस गोल्ड नए कारोबारी अवसर तैयार करने, रोजगार पैदा करने में और युवाओं के लिए उद्यमिता के अवसर पैदाकर जीवन में बदलाव में प्रमुख भूमिका निभाती रहेगी। टाटा एस गोल्ड जाने-माने अगले हिस्से, बेहतर अर्गोनॉमिक्स के साथ स्टीरिंग व्हील और काम आने वाले डैशबोर्ड के साथ आता है। बेहतर सवारी, स्टाइल और आकर्षक कीमतों के बेजोड़ मिश्रण के साथ यह पूरे देश में लाखों उद्यमियों और मार्केट लोड ऑपरेटर्स के लिए उपयुक्त कारोबारी साझेदार बना रहेगा। उन्होंने कहा कि टाटा मोटर्स अपने विविधीकृत पोर्टफोलियो के साथ भारत में छोटे वाणिज्यिक वाहनों का बाजार तैयार करने और उसके विस्तार में अग्रणी रही है। 68 फीसदी बाजार हिस्सेदारी के साथ टाटा मोटर्स छोटे ट्रकों की श्रेणी में बाजार में सबसे अग्रणी रही है। सड़कों पर चल रहे 20 लाख से अधिक वाहनों के साथ टाटा एस बेजोड़ है और ग्राहक इसके साथ एक भावनात्मक जुड़ाव महसूस करते हैं।

कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक प्रतियोगिता का दूसरा संस्करण लॉन्च

उदयपुर। कैस्ट्रॉल, भारत की अग्रणी ल्यूब्रिकंट कंपनी, ने देश के सबसे बड़े मैकेनिक स्किलिंग और टेस्टिंग पहल - कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक प्रतियोगिता के दूसरे संस्करण की शुरूआत की। कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक प्रोग्राम पहला कौशल प्रदान एवं मूल्यांकन हेतु कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य मैकेनिकों के कौशल को सम्मानित करना और अपने ज्ञान व प्रतिभा को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान कर उन्हें पहचान दिलाना है।

कैस्ट्रॉल इंडिया के उपाध्यक्ष, मार्केटिंग, केदार आपटे ने कहा कि कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक प्रतियोगिता के दो तत्व हैं - एक, मैकेनिकों को तकनीकी जानकारी और कौशल प्रदान करना और दूसरा, उनके कौशल का प्रशिक्षण, जिसमें मैकेनिकों की विजेता टीम कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक ऑफ द ईयर होगी। पिछले वर्ष हम 50,000 से अधिक मैकेनिकों के साथ जुड़ पाए थे और इस संस्करण में हमारा लक्ष्य और अधिक कार एवं बाईक मैकेनिकों की तकनीकी क्षमता में सुधार लाना है जिससे भारत के वाहन रखरखाव मानकों में सुधार हो सके।

कैस्ट्रॉल सुपर मैकेनिक प्रतियोगिता के 2018 संस्करण की शुरूआत पूरे भारतवर्ष में पंजीकरण चरण के साथ होगी। सुपर मैकेनिक-बाईक के लिए 18001201401 पर कॉल कर सकते हैं। मैकेनिक प्रारम्भिक राउण्ड में भाग ले सकते हैं जिसमें आईवीआर (इंटरएक्टिव वॉइस रेस्पॉन्स) आधारित प्रश्न शामिल हैं। इसके बाद देशभर के 8 शहरों में ऑन-ग्राउण्ड आयोजन किए जाएंगे।

नाभि के नीचे का हिस्सा विकसित कर बच्चे को दिया नवजीवन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने 'एक्स्ट्रोफी ऐपीस्पेडियाज काम्प्लेक्स' नामक बीमारी से ग्रसित सात माह के बच्चे का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि पीआईएमएस के पीडियाट्रिक विभाग में गत दिनों सात माह के बच्चे भानु (बदला हुआ नाम) को भर्ती कराया गया जिसकी अवस्था दयनीय थी। उसके नाभि के नीचे का पेट का हिस्सा नहीं बना हुआ था, पेशाब की थैली शरीर के बाहर खुली हुई थी, लिंग आधा बना हुआ था तथा दोनों अण्डकोष पेट के अंदर थे। मेडिकल भाषा में इस बीमारी को 'एक्स्ट्रोफी- ऐपीस्पेडियाज काम्प्लेक्स' नाम से जाना जाता है। बच्चे की स्थिति को देखते हुए पीडियाट्रिक सर्जन डॉ. प्रवीण झंवर ने बच्चे का ऑपरेशन किया गया। डॉ. अमित, डॉ. रूचि ने एनेस्थेसिया दिया।

आशीष अग्रवाल ने बताया कि 11 घंटे चली इस सर्जरी में पेशाब की थैली को बंद कर शरीर के अन्दर डाला गया। लिंग पूरा बनाया गया। दोनों अण्डकोष को नीचे लाया गया और नाभि के नीचे का पेट बनाया गया। ऑपरेशन के बाद बाल गहन चिकित्सा यूनिट में डॉ. विवेक पाराशर एवं डॉ. राहुल खत्री द्वारा 21 दिन तक बच्चे की देखरेख की गई। बच्चे के डिस्चार्ज के समय परिजन बच्चे के बदले रूप को देखकर भावुक हो गये और उनकी आंखों से आंसू निकल आए। बच्चे की माँ ने कहा कि जन्म के बाद से ही बच्चे को अनेकों चिकित्सालयों में दिखाया परन्तु सभी जगह से दिल्ली, मुंबई रेफर कर दिया जाता था। उनकी माली सही नहीं होने के कारण वे बच्चे को वहां नहीं ले जा सके। अग्रवाल ने बताया कि 10 लाख जीवित बच्चों में से किन्ही 3 बच्चों में होने वाली इस बीमारी में जन्म से समय से ही नाभि व उसके नीचे पेट का हिस्सा नहीं बना हुआ होता है। पेशाब की थैली (यूरिनेरी ब्लेडर) पूर्ण रूप से शरीर के बाहर खुला होता है। लिंग का आकार छोटा व बनावट अधूरी होती है तथा दोनों अण्डकोष पेट के अंदर होते हैं।

हादसे में खोई आंखों की रोशनी लौटाई

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक्सीडेंट में फटी पुतली के मरीज का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि सलूम्बर निवासी जयेश सलीव (24) पुत्र लक्ष्मण सलीव की दुर्घटनावश बांये आँख की पुतली फट गई थी। इसके कारण उसकी आँख की रोशनी दो फिट रह गई थी। गत दिनों परिजन उसे पेसिफिक हॉस्पिटल उमरड़ा में लेकर आये। यहां आंखें की जांच के बाद चिकित्सकों ने उसकी आँख का ऑपरेशन किया। ऑपरेशन के पश्चात मरीज की आँख की रोशनी 6/24 हो गई है। मरीज अब 6 मीटर की दूरी से भी पढ़ने में समर्थ है। यह ऑपरेशन निशुल्क किया गया। मरीज के परिजनों ने पीआईएमएस की सेवाओं पर संतुष्टि जताई है।

बिग बाजार में 1500 वस्तुओं की कीमतों में कटौती

उदयपुर। बिग बाजार ने प्रतिदिन इस्तेमाल किए जाने वाले 1,500 उत्पादों की कीमतों में कटौती की घोषणा की। ग्राहकों को इन न्यूनतम कीमतों का लाभ वर्षभर मिलेगा, क्योंकि कंपनी द्वारा हाल ही में शुरु किए गए 'हर दिन लोवेस्ट प्राइज' प्रस्ताव के हिस्से के रूप में स्थायी तौर पर ऐसा किया जाएगा।

फ्यूचर ग्रुप के सीईओ किशोर बियानी ने कहा कि रोजमर्रा के इस्तेमाल की वस्तुएं घी, चीनी, खाद्य तेल, डिटर्जेंट पाउडर, टॉयलेट क्लीनर, साबुन, शैंपू, टूथपेस्ट, नूडल्स, हेल्थ ड्रिंक, चाय, कॉफी, बिस्कुट, सॉस, और कई अन्य उत्पाद अब 140 से अधिक शहरों में मौजूद बिग बाजार स्टोर में सबसे कम कीमतों पर उपलब्ध होंगे। नई कीमतों से ग्राहकों के पैसे की बचत होगी तथा उनके लिए दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं अधिक सस्ती एवं किफायती होंगी। उन्होंने कहा कि देश के सबसे विश्वसनीय रिटेलर बिग बाजार का अनुमान है कि, इस पहल से छह करोड़ से अधिक परिवारों को लाभ मिलेगा। बिग बाजार सभी श्रेणियों के 1500 रोजमर्रा उत्पादों के मूल्य में 6 प्रतिशत से 36 प्रतिशत तक की कमी की पेशकश करेगा। इस कार्यक्रम के परिणामस्वरूप भारतीय उपभोक्ताओं के लिए संभवत: 2000 करोड़ रुपये की अतिरिक्त बचत होगी। इस पहल के चलते अब नए ग्राहक भी हमारे स्टोर से जुड़ेंगे और मौजूदा ग्राहक भी पहले की अपेक्षा अधिक आकर्षित होंगे।

डेन्युब ग्रुप द्वारा फिल्मफेस मिडिल इस्ट मेगेजिन लॉच

उदयपुर। युएइ के विशाल एवं विविधतापूर्ण कोनलोमरेट डेन्युब ग्रुप द्वारा दुबई के बॉलिवुड पार्क्स के राजमहल थियेटर में डायनेमिक मीडिया इंडस्ट्री में भव्य प्रवेश फिल्म एवं सेलिब्रिटी मैगिजन फिल्मफेर मिडिल इस्ट के रिलांच के साथ किया गया। डेन्युब ग्रुप के संस्थापक एवं चेयरमेन रिजवान साजन ने बताया कि इस इवेन्ट में क्लास लक्जरी, स्टाईल और भारत एवं पाकिस्तान की सेलिब्रिटीज दीपिका पादुकोण, करण जौहर, फवाद खान, मोहविश हयात, मनीष मल्होत्रा, जेकी श्राफ, दिया मिर्जा शामिल थे।

अरमान मलिक, अमाल मलिक, उषा उथुप और बप्पी लहरी जैसे गायकों ने हाई नोट्स पर ऑडियंस को अपनी शैली से मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके अलवा प्रतिभाशाली भारतीसिंह ने लोगों को खूब हंसाया। इस दौरान अभिनेत्री श्रीदेवी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। दीपिका पादुकोण ने इस इवेंट में मेगजिन कवर को प्रस्तुत किया।

रिजवान साजन ने कहा कि फिल्मफेर मिडिल इस्ट एक कल्ट ब्रान्ड है और वह मेरा एक सपना था कि यह ब्रान्ड दुबारा जीवंत हो। हमने यह वेन्चर शुरू किया क्योंकि हम मानते है कि यह मैगिजन सिनेमा की एसेन्स है और टार्गेट ऑडियंस में विशाल रिडरशिप है। मुझे उम्मीद है कि इसे पहले की तरह लोकप्रियता प्राप्त होगी। मैगिजन के इस नये अवतार को युएई एवं जीसीस और आरब पोप्यलेसन में सिनेमा एवं सेलिब्रिटीज के चाहकों के अलावा विशाल एशियन प्रवासिओं तक पहुंचाई जाएगी। फिल्मफेयर एमई द्वारा मिडिल इस्ट में कन्टेंट के लिये सीमाचिन्ह सर्जता है। यह विजनरी और फोरसाइटेड ग्रुप द्वारा लॉच हुआ है। स्टार्ट मीडिया इन्कोर्पोरेशन अंतर्गत और डेन्युब ग्रुप के सहयोग से यह मेगिजन आगे जाएगा।

डॉ. विलियम एन्ड्रूज़ द्वारा गीतांजली में जोड़ प्रत्यारोपण

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, उदयपुर के अस्थि रोग विभाग में डीजेओ पावर मोशन के संयुक्त तत्वाधान में 3-डी जोड़ प्रत्यारोपण पशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ।

कार्यक्रम में अमेरिका के चीफ ऑर्थोप्लास्टीक सर्जन डॉ. विलियम एन्ड्रूज हॉज ने स्वयं द्वारा आविष्कृत डीजेओ 3-डी जोड़ प्रत्यारोपण को रोगी के दोनों घुटनों में प्रत्यारोपित कर लाईव प्रदर्शन किया।

उन्होंने बताया कि यह प्रत्यारोपण सामान्य मानुष्य के घुटनों की तरह ही व्यवहार करता है और ऊपर व नीचे की ओर भी मुड़ सकता है। प्रत्यारोपण के बाद रोगी पालती लगाकर भी बैठ सकता है। इसका जीवनकाल लगभग 25 वर्ष का है जो अन्य की तुलना में अत्यधिक है। गीतांजली के अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ. रामावतार सैनी ने बताया कि दक्षिणी राजस्थान में केवल गीतांजली में ही यह प्रत्यारोपण किया जा रहा है।

'विमर्श' की सृजन संगोष्ठी

विमर्श की ओर से गत दिनों आयोजित संगोष्ठी में अट्ठाईस महिला रचनाकारों ने अपने सृजन से श्रोताओं को विस्मित कर दिया।

उपाध्यक्ष डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ ने बताया कि डॉ. चन्द्रकांता बंसल, डॉ. मंजु चतुर्वेदी, प्रीता भार्गव, डॉ. रश्मि बोहरा, डॉ. सरबत खान, डॉ. विभा सक्सेना, डॉ. विजयलक्ष्मी चौहान, डॉ. कल्पना जैन, डॉ. जैनब बानू, डॉ. सीमा सिंह, रश्मि पगारिया ने कविताओं, लघुकथाओं, कहानियों तथा चर्चा-विमर्श में उल्लेखनीय भागीदारी दी। प्रो. श्रीनिवासन अय्यर ने कालिदास के शाकुन्तलम में घटित घटनाओं के माध्यम से स्त्री-विमर्श के संदर्भों की प्रासंगिकता को सोदाहरण संपुष्ट किया।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

गृहमंत्री कटारिया द्वारा मोबाइल 7डी सिनेमा का उद्घाटन

उदयपुर। स्क्रीन पर पड़ने वाली पानी की फुहारें अपने चेहरे पर और जमीन पर रेंगते हुए कीड़े-मकोड़ों को पैरों में रेंगते हुए महसूस करने का रोमांच प्रदान करता है 7डी सिनेमा। शहरवासियों के लिए यह अनुभव सात दिन के लिए निशुल्क उपलब्ध करवाया है। राज्य सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग द्वारा इस सौगात का उद्घाटन फतहसागर पाल पर गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने किया। उन्होंने कहा कि शहरवासी युवा और बच्चों को 7डी सिनेमा जरुर देखना चाहिए। इस तकनीक को लोकप्रिय बनाने हेतु राज्य सरकार द्वारा मोबाइल वेन पर इस सिनेमा का निशुल्क प्रदर्शन किया जा रहा है। मोबाइल वैन पर वातानुकूलित सिनेमाहॉल में आमजन के साथ बैठकर गृहमंत्री, जिला कलक्टर बिष्णुचरण मल्लिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी उपनिदेशक शीतल अग्रवाल ने उच्च तकनीक आधारित सिनेमा का लुत्फ उठाया।

भजन बिना कभी.........

(पृष्ठ दो का शेष)

सोहनीबाई से यह सब सुन में सुन्न, शून्य हो गया हूं। गाने-बजाने वाले कलाकार तो मैंने कई देखे, सुने पर किसी ने मेरी माथे की ऐसी गुंडी नहीं खोली जैसी सोहनीबाई ने खोल दी। पोथियां भी कई पढ़ीं। गुरुजनों से भी बहुत कुछ सुना किंतु यह अनसुनी विधा कैसे यूं ही रह गई। मैं ठगा सा रह जाता हूं और हाथ जोड़ उस महा-देवी से विदा लेता हूं।

तब से सोहनीबाई के ये कथन मेरे चेतन-अवचेतन में स्थायी रूप से पैठ बनाये हैं। लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ की ज्ञान-गादी पर जब मुझे बहुत कुछ सुनने-समझने का अवसर मिला और जो जितना अदृश्य जगत दृश्य में दिखाई दिया तब मैं सोहनीबाई को ठीक से समझ सका। मीरां की खोज-यात्रा में कमधज कल्लाजी बावजी से मीरांबाई का अध्ययन कराते बहुत सारी ज्ञान-गांठों के बीच मैंने यह पाया कि भक्ति में आकंठ डूबने वाला इस अगजग में रहते हुए भी अपने को उससे सर्वथा विलग अशरीरी बनाने की सामर्थ्य पा लेता है इसीलिए मुझे यह अनुभूति हुई कि भक्तिमती मीरांजी का नाम जितना पद-रचना के कारण चर्चित, ख्यात और सुख्यात है उतना ही उस रचनाधर्मिता से उनका सरोकार कोसों दूर है। यही कारण है कि हमारे देश में सर्वत्र ही विभिन्न प्रांतों में, विभिन्न भाषा, बोलियों और वाणियों में मीरां के भजन प्रचलित हैं तब भी मीरां ने एक भी पद की रचना नहीं की और जो भजनीक, गायक, वादक, नर्तक मीरां के भजन गा रहे हैं बजा रहे हैं, नाच रहे हैं, उनकी रचना जहां भी होती लग रही है, मीरांमय भाव, स्वरूप, रुह, मिथक आदि के अशरीरी रूप में हो रही है।

सोहनीबाई ने बताया कि सामरजी ने पहलीबार उन्हें 1952 में कलामंडल की स्थापना और 1953 में राजस्थान लोकानुरंजन समारोह में बुलाया था। उसके बाद तो अनेक समारोहों में और फिर 1977 में कलामंडल की रजत जयंती पर जब मेरे संपादन में 'रजन्तिका' नामक स्मारिका निकली और ऐसा भव्य समारोह किया कि वैसा उसके बाद कई रजत-स्वर्ण जयंतियों में नहीं देखा गया। इस समारोह में सोहनीबाई का भजन सुन देश के अनेक कलाकारों ने दांतों तले उंगलियां दबाईं। मद्रास (चैन्नई) की ख्यातलब्ध कलाविद रुक्मिणीदेवी अरुंडेल ने तो यहां तक कहा कि उत्तर-दक्षिण के सैंकड़ों भजनीकों को उन्होंने सुना किंतु जिस दर्द से सोहनीबाई गाती है, वैसा कोई नहीं गाता।

सामरजी की मृत्यु के बाद जब मेरे द्वारा संपादित 'रंगायन' मासिक का उनकी याद में स्मृति अंक प्रकाशित किया गया तो सामरजी का सोहनीबाई पर लिखा हस्तलेख प्रकाशित किया गया। उसमें उन्होंने लिखा- ''सोहनीबाई जब गाती हैं तो उनके अन्तर की वेदना और आत्म-निवेदन भाव स्वरों के साथ-साथ आंसुओं में भी ढलने लगते हैं। इसका पता उसी समय लगता है जब आंखों से ढुलकर उनके आंसू तन्दूरे पर पड़ते हैं और विपुल प्रकाश में मोतियों की तरह चमकते हैं।''

सच है, मरने के बाद कोई रुह किसी न किसी रूप-स्वरूप में अपनी दबंग उमंग की हैसियत दिखाती ही है फिर आत्महत्या करने वालों को तो सात जनम लेने पड़ते हैं। मीरां ने समुद्र समर्पण किया था अत: उसके सात जन्मों का यदि कोई खुलासा हो तो निश्चय ही एक जन्म सोहनीबाई के रूप में हुआ होगा तभी तो सोहनीबाई को जिसने भी देखा, सुना उन्हें मीरां की याद अवश्य हो आई। ऐसा कैसे क्यों हो जाता है जब सबकी अनुभूति एक जैसी होकर किसी एक ही बिन्दु को केन्द्रित करने की सहमति में सभी अपना स्वर मिलाये दिखते हैं।

शब्दांक सहित 7 विद्यार्थियों का केवीपीवाई में चयन

उदयपुर। एमडीएस सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में अध्ययनरत 7 विद्यार्थियों ने किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना परीक्षा के द्वितीय चरण में उत्तीर्ण होकर सफलता प्राप्त की है। एमडीएस के 7 नियमित विद्यार्थियों ने सफलता प्राप्त की है जिनमें शब्दांक भानावत, अब्बास टेलर, रिया आचार्य, श्रेयांश गुप्ता, वरुण सोनी, जय बांगड़ तथा हार्दिक खमेसरा ने सफलता प्राप्त की है जो आईआईटी-जेईई एवं अन्य इंजिनियरिंग प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे है।

किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना (केवीपीवाई) मूल विज्ञान पाठ्यक्रमों और अनुसंधान करियर के लिए असाधारण उच्च प्रेरित छात्रों को आकर्षित करने के लिए भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा शुरू और वित्त पोषित बुनियादी विज्ञानों में फैलोशिप का एक राष्ट्रीय कार्यक्रम है। किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना के तहत कॉलेज स्तर पर प्रथम वर्ष से तृतीय वर्ष तक 5000 रूपये प्रति माह व उसके बाद उच्च स्तरीय शिक्षा में प्रति माह 7000 रूपये की फैलोशिप प्राप्त होती है। एम.डी.एस. स्कूल के निर्देशक डॉ. शैलेन्द्र सोमानी व प्राचार्या डॉ. निधि माहेश्वरी ने सभी चयनित विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

अनुष्का द्वारा 256 यूनिट रक्त एकत्र

उदयपुर। डॉ. अनुष्का विधि महाविद्यालय तथा अनुष्का एकेडमी के संयुक्त तत्वावधान में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। डॉ. अनुष्का सुराणा की स्मृति में शिविर में कुल 256 यूनिट रक्तदान प्राप्त हुआ जो निर्धारित लक्ष्य से अधिक रहा। शिविर में आरएनटी मेडिकल कॉलेज एवं सरल ब्लड बैंक की एसी वॉल्वो बस में रक्तदान किया गया। इस दौरान पेसिफिक हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर द्वारा निशुल्क दंत परामर्श एवं फोर्टिस जेके हॉस्पिटल की ओर से निशुल्क नेत्र परामर्श एवं शुगर परीक्षण भी किया गया।

शिविर के साथ अनुष्का ग्रुप के संस्थापक डॉ. एसएस सुराणा एवं इनके पूरे परिवार ने देहदान के संकल्प पत्र भरे। कमला सुराणा ने रक्तदाताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

सिटी पैलेस में राणा सांगा की जयंती

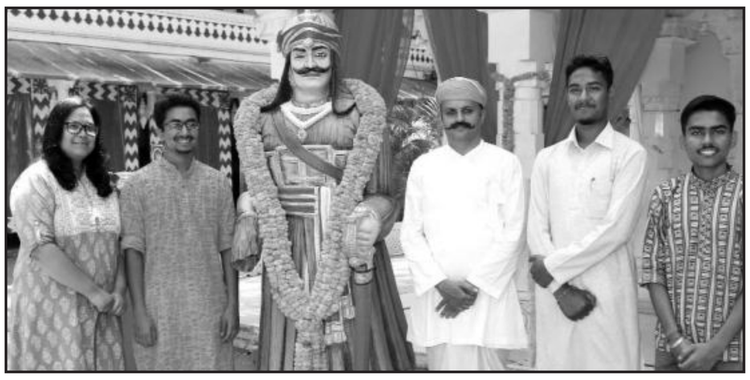

उदयपुर। सिटी पैलेस में पर्यटकों तथा स्कूली विद्यार्थियों के लिए मेवाड़ महाराणा संग्राम सिंह प्रथम (राणा सांगा) की 536वीं जयंती पर 9 अप्रेल को विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसके अन्तर्गत सांगा के जीवन की चुनिंदा प्रेरक घटनाओं को मार्तण्ड फाउण्डेशन के विलास जानवे ने बड़े ही रोचक रूप में निर्देशित कर प्रभावी बनाया।

रंगकर्मी मनीश शर्मा तथा समर्थ जानवे के संगीत और गायन ने एक-एक दृश्य को अभिराम ऊंचाई दी। पार्श्व मंच में रेखा सिसोदिया, शुभम एवं भुवन शर्मा तथा अब्दुल मुबीन का उल्लेखनीय सहयोग रहा। कार्यक्रम में महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन के ट्रस्टी लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ एवं उनकी पत्नी निवृत्ति कुमारी मेवाड़ की उपस्थिति अन्त तक प्रेरणा का सबब बनी रही।

गुड़ की महिमा

गुड़ तो म्हारा जीव की जड़ी है
या काया गुड़ की नींव पेईज खड़ी है,
बिना गुड़ खायां म्हूं से जाऊं तो
सपनो आवे जाणें चारूं-मेर
भेल्यां ही भेल्यां पड़ी है।।
म्हूं मांदो व्हे जाऊं तो गुड़
म्हने पाणी में घोळ'र पा दीजो
एक भेली मोटी मीठी
म्हारे मुंडा सामी लटका दीजो
अतरो इंतजाम अगर नी व्हे सके
तो यूं करजो-के
गुड़ री म्हारे मालिश करा दीजो।
गुड़ जो देसी व्हे तो कांई केणो
लूंदा पे लूंदा ले'र चाटतो रैणो
किलो दो किलो भावे जतरो
धाप'र खाणो, अन मिनख
जो हायलो केवै तो वां पे
ध्यान नीं देणो।

-डॉ. सत्यनारायण व्यास

मृत्यु ही सत्य

मृत्यु ही सत्य है
अमर कोई नहीं रह सकता
बड़े-बड़े सम्राट अस्त हो गये
हर चक्रवर्ती को ऋषी कूट पर
किसी पूर्व चक्रवर्ती का नाम मिटाकर
अपना नाम लिखना पड़ता है।
अनन्त तीर्थंकर भी
गुमनामी के अंधेर में खो गए।
तस्वीर मनुष्य को
ज्यादा वर्ष जिन्दा नहीं रख सकती
ओडियो वीडियो की
उम्र ज्यादा नहीं होती
किताबों को दीमक खा जाती है
कम्प्यूटर को वायरस नष्ट कर देते हैं
स्टैच्यू टूट कर गिर जाते हैं
उन पर कालिख भी
पोती जा सकती है।
कब्रें खोदी जा सकती हैं।
पिरामिड भी मिट जाते हैं।
कालपात्र जमीन में गड़ा रह जाता है।
इतिहास के गलत अर्थ संभव हैं।
आदमी कितनी ही
पौष्टिक दवाएं खाए
एक दिन मृत्यु को आना है।
क्यों न हम
मृत्यु के डर से मुक्त हो जायें!

-शासनश्री मुनि सुखलाल

बच्चों को मत बनाइये गैजेट्स का गुलाम

उदयपुर। गैजेट्स की दुनिया बहुत चकाचौंध कर देने वाली है। आज हर बच्चे के चारों और मोबाइल सहित दुनियाभर के गैजेट्स हैं जो उसे तकनीक का गुलाम बना रहे हैं। उसकी स्वाभाविकता, बचपन और बाल सुलभता छीन रहे हैं। स्कूलों के कक्षा-कक्ष स्मार्ट हो गए हैं, अब खेल के मैदानों में चिंता रहित खेलकूद और मस्ती भरे बचपन के दिन नहीं दिखाई देते, बच्चा घर में ही किसी कोने में किसी न किसी वर्चुअल दुनिया में गुमसुम खोया हुआ अपना वक्त बिता रहा है। माता-पिता ध्यान दें कि कहीं इसी वजह से उसकी मैमरी कमजोर तो नहीं हो गई? उसका व्यवहार बचपन में बड़ों जैसा तो नहीं हो गया है? आदतें तो अचानक नहीं बदल रहीं?

ये विचार लर्न एंड ग्रो इंटरनेशनल प्री-स्कूल में बच्चों के मनोविज्ञान पर आयोजित विशेष सेमिनार में स्कूल के डायरेक्टर डेरेक एंड फियोना टॉप ने व्यक्त किए। उन्होंने भारतीय पारम्परिक ज्ञानार्जन पद्धति को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए कहा कि नींव मजबूत होगी तो हमारा कल मजबूत होगा। बच्चों को कई सामाजिक बुराइयों से बचाया जा सकेगा।

मनोविशेषज्ञ डॉ. स्वाति गोखरू ने बताया कि गैजेट्स पर जरूरत से ज्यादा निर्भरता बच्चों के संपूर्ण व्यक्तित्व पर असर डाल रही है जिससे वे ब्लू व्हेल जैसे गेम की ओर आकर्षित हो रहे हैं, कई बार डिप्रेशन के शिकार होकर घातक कदम उठा रहे हैं। फेसबुक और सेल्फी की दुनिया में खोकर वैचारिक मौलिकता खोने लगे हैं। इनसे बचना है तो पेरेंट्स को सबसे पहले खुद सुधरना होगा। घर पर टीवी, इंटरनेट, लेपटॉप, टेब-मोबाइल में मशगूल रहने की बजाय बच्चों को प्रकृति के करीब ले जाएं। उन्हें नेचुरल क्रिएशन के क्षेत्र में दिमाग के घोड़े दौड़ाने के अवसर दें। सेमीनार में मिस्टर भारतीय एजुकेशन के निदेशक मनोज राजपुरोहित ने भी विचार व्यक्त किये।

कान्यो-मान्यो

जुड़वां सबदां री करामात

बोलीचाली मांय केई जुड़वां सबद है ज्यांने वैवार में तो छोड़ां नीं पण वांनै तवज्जु भी नीं दां। दाणा-पाणी, अतल-पतल, अळळ-खळळ, कुवा-बावड़ी, भांड-भवाई, अटली-मटली, रात-दन जस्या केई सबद है ज्यांरी जोड़ी है। या जोड़ी बखर जावै तो कबद पैदा वै जावै। दोयां री दोसती धणी-लुगाई जेड़ी गैरी है। एक वनां दूजा रौ पायो हाल जावै। मान्यो मन में कान्या रौ बखाण सुणतो र्‌यौ जदी बोल्यो कै थारा सत वचन है। पैलीपोत दूध-पाणी री वात कर।

जदी कान्यो बोल्यो, दोयां मूं कुण सवायो है। दूध आगे कै पाणी। मान्यो बोल्यो, म्हनै परखरियो है तो सुणलै म्हारी वात। यूं तो दोयां री आपणी-आपणी जगै पैचाण है पण पाणी री होड़ नीं। कान्यो बोल्यो कै थूं थारी जइगां ठीक है पण पैदाइश बालक नै दूध चावै। पाणीऊं वींरो जीवण नी चालै। मनख ई नी ढांडा ढोर मांय भी सगळा थन धावै।

मान्यो बोल्यो, थारी वात सदल राखतां थकां बोलूं कै दूध जदी आपणे आपे स्यूं बारै आ जावै, खड़बड़ करतो उफाण मारै तो पाणी वने ठंडो करै। गरमास री हैंकड़ी पोमावे तो पाणी पैली जलै नै वींरी स्हाय करै। पाणी जो धारले तो दूध रो उफाण पाणी भरवा लाग जावै अर पाणी प्रलय दै तो आखी दनियां नै पैं बोला दै।

पाणी बाढ़ रौ रूप करै तो आछा-आछा तीस मारखां नै धूळ चटायदै। हैंकड़ीऊं तण्या रूंखां नै जमीदोज कर दै पण जी नमणसील वैने आड़ा पड़ जावै वांरो बालई बांको नी करै। इण खातर पाणी दूध स्यूं वत्तो समझ्‌ नै गंभीरपेटा रौ है।

कान्यो कान री पापड़ी पकड़ बोल्यो, मानग्यो मान्या थनै। थारी अकल नै दुवाई दूं। पाणी तो सेवट में पाणी है जो सगळा जीवां में आपणी पाण राखै। पाणी परो जावै तो सगळी ओपमा फिजूल जावै।

नारायण सेवा की जैकी श्रॉफ व जेठालाल द्वारा सराहना

उदयपुर। अहमदाबाद में नारायण सेवा संस्थान द्वारा किये जा रहे मूल्यवान जन-सेवा कल्पों की सिने अभिनेता जेकी श्राफ एवं तारक मेहता का उल्टा चश्मा फेम जेठालाल (दिलीप जोशी) ने खुलकर सराहना की। होटल हयात रेजेन्सी में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय अवॉर्ड समारोह में संस्थान के चेयरमैन कैलाश मानव, तथा अध्यक्ष प्रशानत अग्रवाल ने विभिन्न राज्यों से आये दानवीर भामाशाहों का स्वागत किया और संस्थान द्वारा किये जा रहे निशुल्क सेवा प्रयासों की जानकारी दी।

सिने अभिनेता जैकी श्रॉफ ने यह सम्मानितजन दिव्यांग बच्चों को अपने पैरों पर खड़ा करने में सहारा बन कर न केवल उनके जीवन को संबल प्रदान कर रहे हैं बल्कि अपने जीवन को भी सार्थकता प्रदान कर रहे हैं। दिलीप जोशी ने कहा कि नारायण सेवा का काम किसी तपस्या और साधना से कम नहीं है। मानवता की इस सेवा को शब्दों में बयां करना नामुमकिन है। समारोह में मुख्य अतिथि भरत भाई बियानी एवं ओमप्रकाश गहलोत ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर विशाल शर्मा, प्रीति शांति भंसाली, रामाबेन उमिया जोशी, ठाकुर दास, राजेश दरबारी, अनिता राज, शैल श्रीवास्तवा, मूलचंद.बी प्रजापति, महावीर प्रसाद सहवाल, डॉ. राम रतन, देवेन्द्र सिंह परिहार, बसन्तराम.एस प्रजापति, राम लक्ष्मण गढ़ढानी, कल्याण सहाय शर्मा, डॉ. श्यामाबेन वांचू, रुकमणीबेन गोक्लानी, भावनाबेन परेश भाई शाह, ओमप्रकाश गहलोत, भरत शाह, श्याम सुन्दर राठी, भरतभाई विरानी, हार्दिक अमरीश भाई, मंजू त्यागी व अनिता राज को सम्मानित किया गया। निदेशक वंदना अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह के दौरान कैलाश मानव व प्रशांत अग्रवाल ने संस्थान के विशेष मोबाइल ऐप की लॉन्चिंग की। इसके माध्यम से संस्थान के सेवा प्रकल्पों कार्यक्रमों, योजनाओं आदि की जानकारी प्राप्त की जा सकेगी। कार्यक्रम में संस्थान के दीपक मेनारिया, रोहित तिवारी, दल्लाराम पटेल, जितेन्द्र गौड़ व यशवंत सिंह भी उपस्थित थे। संचालन ओमपाल सीलन ने किया।

इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में शामिल हुआ उदयपुर के 2387 बच्चों का प्रशिक्षण

उदयपुर। उमंगों की नई सुबह में जोश से भरे बच्चों ने जब यौन उत्पीड़न और लैंगिक ज्यादतियों के खिलाफ लड़ने, डट कर खड़े रहने और हर स्तर पर आवाज उठाने का संकल्प लिया तो उम्मीदों की नई किरणों के बीच मानो नए युग ने करवट ले ली। 'चाइल्ड सेक्स्यूअल अब्यूज प्रिवेंशन' पर विशेषज्ञों की बातें-हिदायतें और नसीहतें जेहन मे गहरे से उतर गईं। शहर के 2387 बच्चों ने खुद वॉलेंटियर बनकर इस बुराई से लड़ने का संकल्प किया और इसी के साथ उनके इस प्रशिक्षण का नाम दर्ज हो गया 'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में।'

यह ऐतिहासिक और गौरवशाली क्षण था एम.आर भारतीय एजुकेशन के निदेशक मनोज राजपुरोहित के निर्देशन में उदयपुर के यूनिवर्सिटी रोड स्थित स्टेनवर्ड सीनियर सैकण्डरी स्कूल सहित नौ स्कूलों में 'चाइल्ड अब्यूज प्रिवेंशन' पर हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम का जिसे इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में शामिल किया गया।

इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स टीम ने राजपुरोहित को इस अनूठी उपलब्धि के लिए शुभकामनाएं देते हुए तालियों की गड़गड़ाहट के बीच नेशनल रिकॉर्ड का सर्टिफिकेट और मोमेंटो सौंपा। जिन स्कूलों के बच्चों ने मिलकर रिकॉर्ड बनाया उनमें स्टेनवर्ड सीनियर सैकण्डरी स्कूल यूनिवर्सिटी रोड़, स्टेनवर्ड सीनियर सैकण्डरी स्कूल आयड़, स्टेनवर्ड सैकण्डरी स्कूल गिर्वा कानपुर, ज्योति शिशु निकेतन स्कूल, हेप्पी होम स्कूल, लर्न एंड ग्रो प्री स्कूल, एसकेबी स्कूल व मानस एकेडमी शामिल हैं। इसके अलावा 250 टीचर्स व 20 मैनेजमेंट ऑफिशियल्स की टीम ने भी सहयोग किया।

राजपुरोहित ने अपने मिशन की चर्चा करते हुए कहा कि यह नेशनल रिकॉर्ड 'चाइल्ड अब्यूज' को लेकर सोसायटी और बड़े-छोटे बच्चों में जागरूकता लाने के उनके सतत प्रयास का महत्वपूर्ण और सुखद पड़ाव है। उनके मिशन को उदयपुर के छह स्कूलों के बच्चों ने जिस शिद्दत के साथ पूरा किया, वे पूरी टीम के शुक्रगुजार हैं।

वॉलेंटियर्स को विशेष प्रशिक्षण

राजपुरोहित ने बताया कि इस रिकॉर्ड के लिए सभी वॉलेंटियर्स, साइकॉलोजिकल को विशेष रूप से बच्चों को समझाने का प्रशिक्षण दिया व इसका पूर्वाभ्यास भी किया गया। इस अभियान में स्टेनवर्ड स्कूल के सत्यप्रकाश मूंदड़ा एवं एम.आर. भारतीय की डॉ. स्वाती गोखरू का विशेष योगदान रहा।

इंडिया बुक टीम की रही नजर :

इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के एडिटर इन चीफ बिश्वरूप रॉय चौधरी एवं विनोद शर्मा ने बताया कि सभी स्कूलों में उनकी टीम के विशेषज्ञों ने बारीकी से रिकॉर्ड बनाने की प्रक्रिया का मूल्यांकन किया। सभी स्कूलों से इसके वीडियो और फोटोग्राफ्स के प्रमाण भी लिए गए। बच्चों को पहले से तय मानकों के आधार पर निर्धारित समय में सूक्ष्म प्रशिक्षण दिया गया व इसी के आधार पर इस रिकॉर्ड को इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में शामिल किया गया। उन्होंने बताया कि हमारी सोसायटी में चाइल्ड अब्यूज जैसे विषयों पर ऐसे प्रयासों का बहुत गहरा असर होगा व सोच के साथ ही समझ के नए दायरों का भी विकास होगा।

इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के लिए चयनित सभी स्कूलों के बच्चों ने अपार उत्साह दिखाया। कई बच्चे इस क्षण के साक्षी बनने के लिए अपने अभिभावकों को भी स्कूल साथ लेकर आए। बच्चों को विशेष रूप से प्रशिक्षित वॉलेंटियर्स, साइकॉलॉजिस्ट की टीम ने पंद्रह मिनट तक विशेष गाइडेंस दी। सुबह 8.30 से 9 बजे तक हुए इस प्रशिक्षण के दौरान उन्हें बताया गया कि चाइल्ड अब्यूज क्या होता है व इससे कैसे बचा जा सकता है। बच्चों को हेल्पलाइन नंबर के बारे में बताया गया। आस-पास हो रही गतिविधियों में खुद सतर्क रहने तथा अपने साथ रहने वालों को सजग करने के बारे में भी बताया गया। यह रिकॉर्ड सोसायटी में जागरूकता तो लाएगा ही, इस विषय पर अब दबी जुबां में नहीं, खुलकर हर स्तर पर स्वस्थ्य चर्चा भी हो सकेगी। बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए स्कूल, समाज, शिक्षक और विशेषज्ञ मिलकर काम करेंगे तो हम बच्चों को लैंगिक उत्पीड़न मुक्त समाज दे सकेंगे।

इस मिशन का उद्देश्य यह भी है कि स्कूलों में ज्यादा से ज्यादा प्रोग्राम हो, इश्यू को समाज के साथ ही नेशनल लेवल पर और अधिक सेंसिटिविटी सपोर्ट मिले। स्कूलों में भी इसका कोई रेगूलर मॉड्यूल बन सके जो स्वचालित रूप से इस बुराई से लड़ने में सक्षम हो सके।

दान के लिए तीन लाख से अधिक कपड़ों का वर्ल्ड रिकॉर्ड

उदयपुर। वस्त्रदान अभियान के अंतर्गत दुनिया के लगभग 76000

दानदाताओं द्वारा ने ज़रूरतमंद लोगों के लिए 3 लाख से भी अधिक कपड़ों को दान के लिए इकट्ठा कर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया गया। इसके पूर्व यह रिकॉर्ड दुबई के नाम था जहाँ 2016 में स्थानीय लोगों ने 2 लाख 95 हजार एक सौ बाइस कपड़ों का दान किया था। उदयपुर में इस अभियान का आयोजन रविवार 8 अप्रेल को लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ द्वारा किया गया।

उन्होंने कहा कि रोटी, कपड़ा और मकान मनुष्य की सबसे अहम ज़रूरतों में माना जाता है। लेकिन हम भूल जाते है की कपड़े भी कितने महत्वपूर्ण है। रिकॉर्ड तोड़ना हमारे लिए केवल एक शुरुआत है। इसका अगला चरण देशभर के ज़रूरतमंद वर्गों में लाखों लोगों को कपडे बांटना है। उल्लेखनीय है कि इस अभियान की शुरुआत लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ द्वारा इसी वर्ष 15 जनवरी की गई थी। दुनिया के 1700 वॉलिन्टियर्स की मदद से तीन माह तक चले इस अभियान का समापन शिकारबाड़ी होटल में कपड़ों की गिनती के साथ हुआ। इनमें ऑस्ट्रेलिया, यूएसए, ओमान, श्रीलंका तथा यूएई जैसे 12 से अधिक देश शामिल थे। अभियान के लिए कुल 80 ड्राप पॉइंट्स बनाये गए। योगदान देने वाले लोगों में प्रमुख गुजरात से खोड़ल धाम ट्रस्ट, मशहूर कम्पोज़र गायक सलीम सुलेमान, क्रिकेटर इरफ़ान पठान, युसूफ पठान एवं गैर सरकारी संगठन गूँज तथा क्लोथ्स बॉक्स फाउंडेशन उल्लेखनीय हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।